महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरकापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मजहबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका निदान जिसने आख़ीर में गान्धी जी तक को हमारे बीच में न रहने दिया !

लेखक

"भारत में अंग्रेज़ी राज" पुस्तक के मशहूर लेखक

पण्डित सुन्दरलाल जी

(सम्पादक 'नया हिन्द' और जनरल सैक्रेटरी—
'गान्धी हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी')

मूल्य बारह आना।

प्रकाशक :
मारवाड़ी पब्लिकेशन
४० ए० हनुमान रोड नई दिल्ली

प्रथम संस्करण ६०००

मुद्रक :
इन्द्र प्रस्थ प्रिंटिंग प्रेस,
क्वीन्स रोड देहली

दो शब्द

राष्ट्र-पिता महात्मा गान्धी के अमर बलिदान से सबसे बड़ा फायदा हमारे मुल्क और क़ौम को यह मिला है कि साम्प्रदायिकता यानी फ़िरकापरस्ती की ओर आंखे मूंद कर तेज़ी से दौड़ते हुए लोगों को रुक कर थोड़ा सा सोचने और विचारने का मौक़ा मिला। फिरकापरस्ती के नशे में हम इतने चूर हो गये थे कि अपने नफ़े और नुकसान का भी हमें कुछ ख़्याल न रहा था। पंजाब में हुई बरबादी से अभी हमारी आंखें नहीं खुलीं। आखिर में हमने गांधी जी सरीखे महा पुरुष को भी उसका शिकार बना डाला और अपने ही हाथों अपने राष्ट्र पिता की शर्मनाक और दर्दनाक हत्या कर डाली। फ़िरकापरस्ती के हमारे इस घोर पाप पर सारी दुनिया कांप उठी। हर चीज़ के दो पहलू होते हैं। महात्मा गांधी के इस क़त्ल को अमर बलिदान मान कर यदि हम उससे कुछ सबक ले सकें, तो यह शर्मनाक और दर्दनाक वाक़या मुल्क और कौम के लिए एक बड़ी सीख बन सकता है।

साम्प्रदायिकता क्षय की सी बीमारी है, जो छूत की बीमारी की तरह फैलती और अन्दर ही अन्दर नुकसान पहुँचाती चली जाती है। इस किताब में बहुत थोड़े में इस बीमारी के होने की वजूहात बताते हुए उसके इलाज भी बताए गए हैं। अंग्रेजों ने अपनी जिन कूट चालों से इस बीमारी को पैदा किया और उसको चारों ओर फैलाया उनका नकशा खींचते हुए यह भी बताया गया है कि किस तरह अपने धर्म व मज़हब के असली रूप को भुला कर हम तंगदिली के शिकार हुए और उसका सहारा पाकर किस तरह यह बीमारी बढ़ती और फैलती चली गई। हमारे इतिहास को बिगाड़ कर, जान बूझ कर जो ग़लतफ़हमियां पैदा की गई हैं उन पर भी इसमें काफ़ी रोशनी

पं० सुन्दरलाल जी इतिहास के माने हुए विद्वान हैं। उनकी मशहूर किताब "भारत में अंग्रेजी राज" अपने ढंग की एक ही किताब है। आपने मजहबी किताबों को भी खूब गहरी नज़र से पढ़ा है। आपकी किताब "गीता और कुरान" भी अपने ढंग की बेमिसाल है। हिन्दी, उर्दू में कई बार हज़ारों की तादाद में छप चुकी है। "कर्मयोगी" और "भविष्य" जिसे कभी इनकलाब का सन्देशा लेकर प्रकट हुआ करते थे वैसे ही आपका "नया हिन्द" हर मास प्रकट होता हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आपको आखिरी चार महीनों में गान्धी जी के बिल्कुल नज़दीक में रहने और बहुत पास से उनको समझने का मौक़ा मिला था। इसी बीच में आपको पूर्वी और पश्चिमी पंजाब का हज़ारों मील दौरा करके वहां के मसले की वाक़फ़ियत हासिल करने का भी मौक़ा मिला था। इस लिये इस किताब में जो कुछ भी लिखा गया है उसकी क़ीमत बहुत बढ़ जाती है और पढ़ने वालों के लिए वह बहुत काम दे सकती है।

हमारी यह इच्छा है कि यह किताब हर हिन्दुस्तानी के हाथ में और घर में पहुँचे। महात्मा गान्धी के मिशन को पूरा करने की कोशिश में कुछ हाथ बटाने के विचार से ही हम इस किताब की हज़ारों कापियां छापना चाहते हैं। हमारी यह कोशिश उन लोगों के सहारे ही कामयाब हो सकती है जो अपने मुल्क और कौम को इस बीमारी से बचाकर तरक्की पसन्द क़ौमों और मुल्कों की पंगत में बिठाने की इच्छा रखते हैं। हमें पूरा यक़ीन है कि ऐसे भाई बहन इस किताब को चारों ओर फैलाने में हमारा हाथ बटावेंगे।

७० ए, हनुमान रोड
नई दिल्ली
२१-२-४८

—सत्यदेव विद्यालङ्कार

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक

एक हिन्दू नौजवान के हाथ से देश के सब से बड़े नेता और दुनिया के सब से बड़े महापुरुष महात्मा गांधी का मारा जाना इतिहास की कोई मामूली घटना नहीं है। बहुत सों की निगाह में हजरत ईसा की सूली के बाद यह अपने ढंग की पहली घटना है। इस तरह की घटनाओं का मुल्क और दुनिया की किस्मत पर गहरा असर पड़ता है और लोगों के विचार, उनके काम और उनकी आगे की ज़िन्दगी कहीं का कहीं पलटा खा जाती है। यह भी एक कुदरती बात है कि ऐसे दिनों में लोगों के दिल और दिमाग़ अलग अलग तरफ को जा रहे हों और लाखों को ठीक राह न सूझती हो। ऐसी हालत में हमें शान्ति के साथ अपने चारों तरफ देखना, एक दूसरे को समझना

और फिर ठण्डे दिल से देश, धर्म और इन्सानी क़ौम की तरफ़ अपने फ़र्ज़ का फ़ैसला करना चाहिए।

जिस नौजवान लड़के ने महात्मा गांधी की छाती पर पिस्तौल दागा, उसकी समझ को हम ग़लत कह सकते हैं, उस पर तरस खा सकते हैं, पर उसकी नियत पर शक करने की हमें जरूरत नहीं। जिस बात को वह ठीक समझता था उसके लिये उसने अपनी जान को ख़तरे में डाल दिया। हमें अगर देश को बचाना है तो एक दूसरे को प्रेम के साथ और ठीक ठीक समझने की कोशिश करना होगा और सबकी भूलों, सबकी कमज़ोरियों को देश की भूलें और कमज़ोरियां मानकर चलना होगा।

अभी तक हज़ारों हिन्दू भाइयों के दिमाग़ इस तरफ को चल रहे हैं—"इसलाम में उदारता या रवादारी नहीं। दूसरे धर्मों की बरदाश्त नहीं। कुरान में दूसरे धर्मों के मानने वालों के साथ बड़े से बड़े ज़ुल्मों को जायज़ ठहराया गया है। दुनिया के और ख़ासकर हमारे देश के हजार बारह सौ वर्ष के इतिहास में यही कुछ मुसलमानों का रंग ढंग, चाल चलन और रवैया रहा। अंग्रेज़ों के आने के बाद से भी मुसलमानों ने विदेशियों के साथ मिलकर देश के साथ दग़ा किया, इसकी सबसे हाल की और ताज़ा मिसाल मुस्लिम लीग और मिस्टर जिन्ना की सारी कारगुज़ारियां हैं। म्युनिसिपैलिटियों में अलग अलग चुनाव से बढ़ते बढ़ते देश के टुकड़े तक हो गए, जिससे लाखों नहीं करोड़ों जनता बरबाद हुई। इस सब के होते हुए भी कांग्रेस और महात्मा गांधी हमेशा मुसलमानों की तरफ़दारी करते रहे, उनकी हर मांग को हिन्दुओं से मनवाते रहे, उधर ज्यूं ज्यूं मनमांगी मिलती रही, मांगें बढ़ती गईं। हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति को भी इसलाम और मुसलमानों से ज़बरदस्त धक्का पहुँचा है। ऐसी सूरत में अगर हमें अपने देश, धर्म और संस्कृति को मिटा नहीं डालना है तो हिन्दुओं को मज़बूत किया जावे और मुसलमानों को

काबू में रखा जावे या निकाल दिया जावे या हिन्दू बना लिया जावे। पाकिस्तान, जिसके बनाने की ज़िम्मेवारी भी कांग्रेस और महात्मा गांधी पर ही है, बन जाने के बाद तो हिन्दुओं को इसका पूरा हक़ हो जाता है कि हिन्दुस्तान को एक शुद्ध हिन्दू-राज्य बनावें। हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति को उसमें उजागर करें। मुसलमान जो रहना चाहें दब कर रहें, नहीं तो पाकिस्तान चले जावें और वहां जो चाहें सो करें। इस सारे काम के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट थे महात्मा गांधी, उनकी मिली जुली प्रार्थना, उनकी मुसलमानों की तरफ़दारी और उनका हिन्दुओं के अन्दर अलग फौजी संगठन पैदा करने से मुख़ालफ़त। ऐसी हालत में महात्मा गांधी को राह के एक रोड़े की तरह देश के सामने से हटा देना एक पाक कर्तव्य था।"

इस तरह के और इससे मिलते जुलते विचार अबभी लाखों देशवासियों के दिलों में हिलोरे ले रहे हैं। यही वजह है कि महात्मा गांधी के लिए दिलों में आदर और प्रेम होते हुए भी हज़ारों हिन्दू ऐसे हैं जिन्हें जितना गहरा दुःख होना चाहिये, उतना नहीं हुआ। कहीं कहीं से मिठाइयां बंटने की भी खबरें आई हैं। अब हम इस तरह के विचारों की सचाई और उनकी असलियत को परखना चाहते हैं और उनके खिलाफ़ विचारों को भी कसौटी पर कस कर देख लेना चाहते हैं। इस छोटी सी किताब में हम इस सवाल के हर पहलू पर पूरी रोशनी न डाल सकेंगे। हो सकता है कि नए शक़ भी पैदा हो जांय। हम पढ़ने वालों को सिर्फ़ देशके इस संकट की हालत में सोचने की दिशा बता देना चाहते हैं। इसके बाद पढ़ने वाले खुद सोचें और जिनका जी चाहे लेखक की दूसरी पुस्तकों और लेखों को देखें।

इस सारे सवाल के मोटे तौर पर तीन पहलू हो सकते हैं:—

(१) राजकाजी पहलू, जिसका देश की इस वक्त की हालत से ज्यादा वास्ता है।

(२) धार्मिक पहलू, जिसमें समाजी और कलचरल पहलू भी शामिल है।

(३) इतिहासी पहलू, जिसने ख़ासकर हमारे स्कूलों और कालेजों के ज़रिये हमपर गहरा असर डाला है।

हम इनमें से एक एक पहलू को लेकर उस पर विचार करना चाहते हैं।

: १ :

राजकाजी पहलू

●

राजकाज आज हमारी सब बातों पर सबसे ज्यादा छाया हुआ है। हर चीज को दुनिया राजकाज की ही ऐनक से देखती है। इसलिये पहले हम अपनी हालत के राजकाजी पहलू पर ही ध्यान दें। हमारा आजकल का राजकाज अंग्रेजी राज के साथ साथ शुरू होता है। इसलिये हमें इस वक्त की हालत को ठीक ठीक समझने के लिये कम से कम पौने दो सौ बरस पीछे जाना होगा।

अंग्रेजों की कुटिल चालें

अंग्रेजी राज की बुनियादें प्लासी की लड़ाई में रखी गईं। १८ वीं सदी का दूसरा अद्धा शुरु हो चुका था। इस वक्त के बंगाल और बिहार में इतिहास के पढने वालों को यह एक खास बात देखने को मिलती है कि विदेशी अंग्रेज व्यापारी मुल्क के हिन्दू रईसों और सौदागरों से मिलकर यहाँ के मुसलिम राज को उखाड़ने के हथकंडे खेल रहे थे। इसी लिये बाद के अंग्रेज सिराजुद्दौला को खूब काला रंग कर दुनिया के सामने रख सके। उस ज़माने की हमारी स्कूली किताबों में भी सिराजुद्दौला को इन्हीं रंगों में दिखाया गया। सवा सौ बरस से ऊपर बीत जाने के बाद अक्खे कुमारदत्त ने मेहनत और खोज करके अपनी अनमोल किताब में सिराजुद्दौला के ऊपर उन सब कलंकों को झूठा साबित किया। यहाँ तक कि जिस काल कोठरी की बाबत दुनिया भर को बताया जाता था कि सिराजुद्दौला ने अपने देशी और विदेशी दुश्मनों को सज़ा देने के लिये रख रक्खी थी, वह मालूम हुआ कि अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला की रिआया और उसके आदमियों को सज़ा देने के लिये रख रक्खी थी। सिराजुद्दौला हिन्दू या मुसलमान हर बंगाली की निगाह में और दुनिया की निगाह में एक आदर्श देशभक्त, बहुत ही पाक, ऊंचे चलन का और आजादी का सच्चा दिलदादा बनकर चमकने लगा।

अगले सौ बरस के अन्दर यानी सन् १८५७ की आजादी की जंग तक लगातार हिन्दुओं को मुसलमानों से और मुसलमानों को हिन्दुओं से, मरहठों को राजपूतों से और राजपूतों को मरहठों से, निजाम को पेशवा से और पेशवा को टीपू सुलतान से लड़ाया जाता रहा। तफ़सील में जाने की यहां जगह नहीं है। एक एक कर मुल्क के टुकड़े गैरों के कब्जे में आते गये। देशी राजा और प्रजा दोनों पंगु होते चले गये।

नाना फड़नवीज़, हैदरअली और दिल्ली के कुछ दरबारियों को सूझा कि मुल्क किधर जा रहा है ? मेल की कोशिशें होने लगीं । पर मालूम होता है कि फूट और देश दगा की जड़े ज्यादा मज़बूत थीं । सदी के आखिर में निज़ाम और मरहठों दोनों ने विदेशियों के साथ मिलकर टीपू सुलतान की आखिरी कोशिशों को नाकाम कर दिया । होते होते १६ वीं सदी का बीच आया । हिन्दू और मुसलमानों को एक तरफ और मरहठों और राजपूतों को दूसरी तरफ एक दूसरे से लड़ाये रखने की कोशिशें बराबर जारी रहीं । उस वक्त की हालत को भांप कर गवर्नर जनरल लार्ड अलेनब्रू ने साफ कहा कि—"मुसलमान क़ौम हमारी कुदरती दुश्मन है । इसलिये हमें हिन्दुओं को उनके खिलाफ करने और अपनी तरफ मिलाने की पूरी कोशिश करनी चाहिये ।" देशभक्तों की कोशिशें भी अपना काम करती रहीं । सन् ५७ का दिन आया । लाखों हिन्दू और मुसलमानों ने, सम्राट् बहादुरशाह, नाना धोंधूपंथ और रानी लक्ष्मी बाई ने मिलकर एक बार मुल्क को आज़ाद करने की जी तोड़ कोशिश की । आज़ादी एक बार हमारे दांये बांये मंडरा रही थी । ऐन वक्त पर सिखों और गोरखों की देश-दग़ा ने फिर एक बार मुल्क के बढ़े हुए हाथ पैरों को कुचल दिया और हमारे दिलों को पस्त और बेड़ियों को और मज़बूत कर दिया । फिर लगभग २५ साल तक हिन्दुओं को बढ़ाया और मुसलमानों को दबाया जाता रहा । ख़ास दिल्ली के हिन्दू मुसलमानों को एक दूसरे से फाड़ने के लिये दिल्ली की जामे मस्जिद और सुनहरी मस्जिद दोनों ढाई ढाई सौ रुपये में हिन्दू रईसों के हाथ नीलाम की गई । लार्ड राबर्ट्स के हुकुम से दिल्ली में और उसके आस पास सब "खूबसूरत और जवान मुसलमानों" को चुन चुन कर तलवार के घाट उतारा गया । हज़ारों को अजीब अजीब घिनावने तरीकों से फांसियां दी गईं । इन फांसियों का दौर, जिनमें हज़ारों बेगुनाह काम आये, लगभग सारे उत्तर हिन्दुस्तान में सन् १८५७ तक जारी रहा ।

इस बीच हिन्दुओं में दम आ चला था। वह तालीम में आगे बढ़ गए थे। सरकार दरबार में भी वह आगे आगे थे। उनमें फिर कुछ उमंगें जागीं, नैशनल कांग्रेस बनाने की जरूरत पड़ी। कांग्रेस को अभी २१ वर्ष ही हुये थे कि उसके जोर को तोड़ने के लिए बंगाल के टुकड़े करने और राजधानी को कलकत्ते से दिल्ली लाने की जरूरत पड़ी। पलड़ा पलटा, उसी जमाने के करीब से मुसलमानों को हिन्दुओं और खास कर कांग्रेस के खिलाफ बढ़ावा दि[illegible] जाने लगा। पर अब सवाल हिन्दू मुसलमानों का ही नहीं था। अब सवाल था दूर की निगाह वाले आजादी के मत वालों और तंगनिगाह वाले छोटे छोटे टुकड़ों पर टूटने वालों का। कांग्रेस में कम या ज्यादा दोनों शामिल थे। इसलिए कांग्रेस के असर को काटने के लिए सन् १९०६ में ढाका में मुसलिम लीग और लाहौर में हिन्दू महासभा दोनों की नींव साथ साथ रक्खी गई। तब से अब तक की हमारी राजकाजी मुसीबतें इन्हीं तीनों की तिगड्डम और खेंचातानी का नतीजा है। सन् १९२१ ने फिर एक बार वह दिन दिखाया जब हिन्दू मुसलमान एक दूसरे की दांत काटी रोटी दिखाई देते थे। अंग्रेज हाकिमों ने महसूस कर लिया कि महात्मा गांधी का प्रोग्राम "कामयाबी से एक इञ्च भर नीचे रह गया था।" फौरन एक तरफ शुद्धि और संगठन और दूसरी तरफ तंजीम और तबलीग के बाजार गर्म किये गये। करोड़ों रुपया इन जहरीली तहरीकों में खर्च हुआ। जगह जगह हिन्दू मुसलमान दंगे होने लगे और बढ़ते गये। सम्भला-सम्भलाया शीराज फिर बिखरने लगा। देश को सम्भालने की कोशिशें भी जारी रहीं, यहां तक कि हम दूसरे महायुद्ध के खातमे तक पहुँच गए। यह है हमारी लगभग दो सौ वर्ष की गिरावट और उसके कारणों पर एक सरसरी निगाह।

१९४५ के बाद

हम सब १९४५ तक आ पहुँचे। दूसरा महायुद्ध ज्यों त्यों कर खत्म हुआ। इसके बाद के हालात को अब जरा और तफसील से

समझाने की जरूरत है। महा युद्ध के बाद अंग्रेज सरकार के सामने जो हालत थी वह यह थी:—

दूसरे महा युद्ध से दुनियां की सब गुत्थियां अभी सुलझी नहीं थीं। कुछ नई उलझनें पैदा हो गई थीं। कम से कम पांच मोटी मोटी बातें अंग्रेज कौम के सामने साफ चमक रही थीं।

पहली यह कि तीसरा महायुद्ध होनहार दिखाई दे रहा था। अब भी उसका डर गया नहीं है। वह टलता जारहा है तो टलने के भी साफ सबब है, पर डर ज्यों का त्यों बना है।

दूसरी यह कि पिछली दोनों बड़ी जंगों में हिन्दुस्तान की जनता की हमदर्दी जर्मनी हो या जापान, इंगलिस्तान के दुश्मनों के साथ जाती थी। यह बात अच्छी रही हो या बुरी, उसकी सचाई से कोई इन्कार नहीं कर सकता।

तीसरी यह कि हर महायुद्ध से हिन्दुस्तानियों में आजादी की प्यास और ज्यादा भड़कती रही, और आजादी हासिल करने के लिये कोशिश भी होती रही।

चौथी यह कि दूसरे महायुद्ध के आखीर के दिनों में खासकर सुभाष बाबू और आजाद हिन्द फौज की बदौलत हिन्दुस्तानी फौज के अन्दर मुसलमान, सिक्ख और सब धर्मों के बीच वह एका, प्रेम और सब में मुल्क की आजादी के लिये वह लगन दिखाई देती थी जो सन १८५७ के पहले तब तक कभी दिखाई नहीं दी थी। दिल्ली में शाहनवाज, सहगल और ढिल्लन का मुकदमा, उस मुकदमे के दौरान में अंग्रेज कमाण्डर-इन-चीफ का यह कह देना कि अगर शाहनवाज और उसके साथियों को सजा देदी गई तो हिन्दुस्तानी फौज मेरे हाथ से निकल जायगी और बम्बई में समुद्री सेना के सिपाहियों की बगावत, सब हिन्दुस्तानी फौज के अन्दर आजादी की उस लगन और उस अनोखे एके की अलामतें थीं।

पाँचवी बात थी अगले महायुद्ध के लिये तैयार रहने की। अगला महायुद्ध जब भी हो उसका फैलाव पहिले और दूसरे महायुद्ध से कहीं ज्यादा हो सकता था। कम से कम सारा पश्चिमी एशिया और पूर्वी योरुप का उसके फैलाव में आजाना लाजमी था और अब भी है। ऐसी हालत में जगह जगह जहां जहां अपना कब्जा और असर था, तैयारी करते रहने की जरूरत थी। यही वजह थी जगह जगह खाने की चीजों, कपड़ों, जूतों वगैरा के बड़े बड़े स्टाक जमा किये जाने की और उन स्टाकों को बराबर ताजा करने की। यही जड़ थी दुनिया भर में कण्ट्रोल राशनिंग और दुनिया भर के व्यौपार को अपने हाथों में लेने की। अंग्रेज सरकार जानती थी कि अगर यह सब करना पड़ा और करना पड़ेगा तो पेट कटने की वजह से रोटी के नाम पर शहर शहर और गांव गांव की जनता मिलकर सरकार के खिलाफ खड़ी हो जावेगी। सूबों में कांग्रेस सरकारों के बनने से पहिले जगह जगह इसी राशनिंग और कण्ट्रोल के खिलाफ हिन्दू और मुसलमान, यहां तक कि कांग्रेस और मुसलिम लीग के मिले जुले जलसे भी हुए हैं।

अंग्रेज सरकार हिन्दुस्तानियों की बढ़ती हुई ताकत को भी देख रही थी। इस पर निगाह डालने के लिये हम जरा और पीछे हट कर देखें। पहले महायुद्ध ने लोगों की उम्मीदों को जगाया। होम रूल लीग कायम हुई। उसका आन्दोलन बढ़ा। पंजाब में लाखों सिपाही योरोप के मैदानों को देख कर लौटे थे। उनकी बदौलत वहां एक नया और अनोखा जोश दिखाई दिया। उसे दबाने के लिये जलियांवाला में जो हत्याकांड हुआ उससे देश भर में बदअमनी और बढ़ी। सन् १९२१ ने वह रंग दिखलाया जिसका हम ऊपर जिक्र कर चुके हैं और जो सन् १८५७ के बाद अपनी तरह की पहली चीज थी। वह ज्यों त्यों कर मद्धम पड़ा। पर सन् ३० और सन् ४२ में से हर तहरीक ने हमें पिछली तहरीक से काफी आगे पहुँचा दिया। यहां तक कि सन् ४२ की कांग्रेस की तहरीक और जापान युद्ध की हालत ने एक बार

हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज को संकट में डाल दिया। अंग्रेज कौम खूब समझ गई कि इन हालतों में अगर किसी दिन अचानक रूस के साथ जंग छिड़ गई और ऐन मौके पर फिर कोई सन् ४२ जैसा आन्दोलन खड़ा होगया तो सल्तनत को सम्भाल रखना नामुमकिन हो जावेगा।

दूसरे शब्दों में अंग्रेज कौम के समझदार राजकाजियों ने देख लिया कि बिना हिन्दुस्तानियों के हाथों में कुछ अधिकार सौंपे, उन्हें नाम की आजादी दिये, राज का भार उनपर डाले और उनकी मदद से अपना असली मतलब पूरा किये बिना काम न चलेगा और कोई रास्ता अग्रेज कौम के लिये था ही नहीं। कांग्रेस के नेताओं को जेलों से निकाल कर बातचीत के लिये बुलाया गया। मुसलिम लीग के लीडरों को भी जमा किया गया। सबसे कहा गया कि आपस में समझौता करलो और आजादी ले लो। कुछ को शक हुआ कि जो आजादी हजारों को कटवाने से भी न मिल सकी वह अब इतने सस्ते दामों में क्यों दी जारही है? पर मुल्क के बड़े बड़े नेताओं ने इस मौके से फायदा उठाना ही ठीक समझा। इसी तरह राज-काज के तरकों और पूरे हथकंडों से यह कोशिश की गई कि लीग और कांग्रेस या हिन्दू और मुसलमान अन्दर से मिलने न पावें और दिलों के अन्दर जातों और फिरकों की दीवारें और मजबूत हो जावें। मुल्क का दो टुकड़ों में बंटवारा तय था। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बंटवारे के जवाब में पंजाब और बंगाल के दो दो टुकड़े करने की मांग सामने आई। पहली चीज तो बुरी थी ही, दूसरी उससे भी बुरी साबित हुई। बाउन्डरी कमीशनों का बैठना लाजिमी हो गया। इन कमीशनों के साथ साथ दोनों तरफ बाउंडरी फौजें रक्खी गईं। इसके बाद जिस तरह दोनों तरफ के इलाकों को एक एक मजहब वालों से खाली करने की कोशिश की गई। जिस तरह इस कोशिश में फिरकेवाराना आग भड़की, केवल पंजाब के अन्दर करीब दो लाख हिन्दू और तीन लाख मुसलमान कत्ल हुये और एक करोड़ से शायद ही कुछ कम अपने घरों से निकाल कर

सैकड़ों मील दूर फेंक दिये गये। अरबों के माल का नुकसान हुआ। जिस तरह नफ़रत, गुस्से और बदले के कुदरती जज़बों ने सारी हिन्दुस्तानी कौम को अनहोने पापों और अनसुनी बर्बादी के समुद्र में गोते खिलाये उन सबकी दर्दभरी कहानी हम यहां दोहराना नहीं चाहते। पर जिस किसी ने जरा भी ध्यान के साथ और गैरजाति-निबदारी से उन दिनों पंजाब की हालत को देखा है उसे मालूम है कि यह सारा तूफान अचानक ही नहीं आ गया था। यह सब खेल सोच समझ कर तरतीब और तरकीब के साथ खेला गया था। पश्चिमी पंजाब के गवर्नर मुडी और सरहद के गवर्नर कनिंघम, ऐसे ही दरजनों सिविल और मिलिटरी अंग्रेज अफसरों और बाउन्डरी फौजों के अंग्रेजों ने जिस तरह इस आग को सुलगाया, भड़काया और अनेक जगह कोशिश के साथ बुझने से रोका, इन सब चीजों की लम्बी और दर्दनाक कहानी लिखे जाने का शायद यह स्थान और समय नहीं है।

हम नहीं कहते कि इंग्लैण्ड की मज़दूर सरकार या उसके सब मेम्बर इस साजिश में शामिल थे। हो सकता है कि उनकी नियत बहैसियत सरकार के यह न रही हो। हो सकता है कि वह हिन्दुस्तान में कम या ज्यादा हकूमतें कायम करके; हकूमत हकूमत की हैसियत से उनसे सुलहनामे करके ही दुनियां में अपने राजकाजी दल को मज़बूत और अपने तिजारती नफ़े को पक्का कर लेना चाह रहे हों। पर जिस किसी ने इस सम्बन्ध की रिपोर्टों और इंग्लिस्तान की पार्लियामेंट की बहसों को ध्यान से पढ़ा है, उसे मालूम है कि पिछले साल भर के अन्दर देश में जो कुछ हुआ है उसकी झलकें इंग्लिस्तान के राजकाजी नेताओं के बयानों और तकरीरों में पहले से ही साफ दिखाई दे गयी थी। इसमें कोई भी शक नहीं कि मि० चर्चिल और उनके बहुत से साथी उधर और छोटे बड़े अनेक अंग्रेज अफसर इधर, सारे इस खेल को बड़ी होशियारी के साथ खेल रहे थे।

हमारी सदियों की कमजोरियों, आपसी नफरतों, हमारी फूट, धर्म मज़हब के बारे में हमारी कुए के मेढक की तरह तंग निगाहों, जात-पांत, छुआछूत, कूट चालों में नातज़ुरबेकारी, खुदगर्ज़ियों और अन्धेपन से वह अच्छी तरह से वाकिफ़ थे। इन सबसे उन्हें पूरी मदद मिली और अभी तक मिल रही है।

अंग्रेज़ों की चालों का नतीजा

जाहिरा नतीजा दिखाई दे रहा है। हिन्दुओं और मुसलमानों के दिल इस तरह फटे हुए हैं जिस तरह पिछले बारह सौ बरस में कभी न फटे थे। सिख और जाट, ब्राह्मण और अब्राह्मण, चितपावन और गैर चितपावन भावनायें पूरे जोर के साथ जाग उठी हैं। मुसलिम राज, हिन्दू राज, जाटराज, सिख राज और मरहठा राज कायम करने के लिए तरह तरह की फौजें तैयार हैं। देश भर की इस अनसुनी दुर्गति को देखकर बहुतों के मुंह से अब भी यह निकलने लग गया है—"इससे तो अंग्रेजी राज अच्छा था।" हिन्दुस्तान सरकार को मजबूत हो कर अपना और पाकिस्तान का झगड़ा सब कौमों की उस पंचायत यू० एन० ओ० के सामने रखना पड़ा, जिसमें अभी तक अंग्रेजों और अमरीका वालों की ही तूती बोलती है।

बहुत से नासमझ भाई हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच लड़ाई की बात हलकी तबियत से कर बैठते हैं। वह भूल जाते हैं कि आज कल की जंग आबादी के आकंड़ो से तय नहीं होती। पिछले दोनों महायुद्धों में तीन तीन चार चार करोड़ की कौमों ने दस दस बीस बीस करोड़ की कौमों को आसानी से पटक दिया। बीसवीं-सदी की लड़ाई जमीन पर चलने वाले टिड्डी-दलों की लड़ाई नहीं होती। वह हवा में उड़ने वाले हवाई जहाजों, भारी भारी बम के गोलों, नये नये हथियारों, टैंकों, गैसों और साइन्स के शगूफों की लड़ाई है। जिसके पास इस तरह का सामान ज्यादा और

बढ़िया होगा उसी के जीतने की उम्मीद है। यह सब सामान अभी तक हिन्दुस्तान में नहीं बनता और न दस बीस वर्ष बनने की उम्मीद हो सकती है। अगर देश की दोनों सरकारों में लड़ाई की आग भड़की, तो दोनों को इस तरह का सामान, एक से एक बढ़कर, करोड़ों का नहीं कम से कम अरबों का उन पश्चिमी मुल्कों से खरीदना पड़ेगा, जिनका माली और तिजारती ढांचा अभी तक बदला नहीं है और जिन्हें दूसरे बड़े बड़े मुल्कों को किसी तरह अपने चंगुल में फांस कर चूसने की उसी तरह जरूरत है, जिस तरह आज से कुछ साल पहिले थी। इंगलिस्तान की तिजारती, कारबारी, माली और राजका-जी जरूरतें आज भी वैसी ही हैं जैसी सन् १९४२ में थीं, जब कि इंगलिस्तान ने पूरी बेदर्दी के साथ हिन्दुस्तान की आजादी की मांग को कुचला था। हमारी तीन दिन की कच्ची और अधूरी आजादी फिर पीढ़ियों के लिये उसके पास गिरवी रक्खी हुई होगी, जिससे हम यह अरबों का कर्जा लेंगे। दोनों सरकारें गैरों के बूते पर लड़ लड़कर चीथड़े चीथड़े हो जायंगी। मुल्क बर्बाद होगा, नफरतें बढ़ेंगी और ज्यादे से ज्यादा अन्दर के छोटे मोटे इन्तजाम को छोड़कर सारे मुल्क की सनती, तिजारती और राजकाजी भाग गैरों के हाथों में होगा।

पिछले तीन वर्ष के योरोप के राजकाज और खास कर इंगलिस्तान और अमरीका के राजकाजियों के बयानों और उनकी तकरीरों से साफ दिखाई देता है कि इंगलिस्तान और अमरीका के बहुत से बड़े बड़े लोग उसी दिन की बाट जोह रहे हैं। वह इन्तजार में हैं कि हम इस अधकचरी आजादी के नाकाबिल साबित हों। हम आपस में लड़ लड़ कर कमजोर हों और नये सिरे से अपना तिजारती कारबारी और फौजी पंजा हम पर एक अरसे के लिये कसें।

अमरीका की सरकार से जो करीब १६ अरब रुपये का कर्जा लिया है उसकी शर्तें ऐंग्लो अमरीकन दल की नीयत को साफ उजागर कर रही है। कर्जे की कुछ शर्तें अभी गुप्त रखी गई हैं। जो शर्तें निकल चुकी हैं उनमें से कुछ सीधे साधे शब्दों में यह हैं—

"दुनिया के सब छोटे बड़े मुल्क दो हिस्सों में बँटे हुए समझे जावेंगे, एक इंग्लैण्ड और अमरीका के दोस्त और दूसरे इंग्लैण्ड और अमरीका के दुश्मन मुल्क।"

इंग्लैण्ड और अमेरीका के दोस्त मुल्कों के साथ नीचे लिखी शर्तें होंगी—

(१) "अगर किसी दोस्त मुल्क में कोई ऐसा कच्चा माल पैदा हो सकता है जिसकी इंग्लैण्ड या अमरीका को अपने कारखानों के लिये जरूरत हो तो उस दोस्त मुल्क का फर्ज़ होगा कि वह माल ठीक मिकदार में पैदा करके इंग्लैण्ड या अमरीका को दे।"

(२) "हर दोस्त मुल्क का फर्ज़ होगा कि इंगलैण्ड और अमेरिका के कारखानों के बने हुए माल के लिये अपने यहां की मंडियों को खुला और महफूज़ रखे।"

(३) "इंग्लैण्ड और अमेरिका का फ़र्ज़ होगा कि हर दोस्त मुल्क को तिजारती कारबारी तरक्की के लिये रुपये से और जानकार आदमियों से मदद दें।"

(४) "हर दोस्त मुल्क का फ़र्ज़ होगा कि अपने यहां कोई ऐसा नया कारखाना या धन्धा न खुलने दे जिससे इंग्लिस्तान या अमेरिका के किसी कारखाने या धन्धे को नुकसान पहुँचने का डर हो।"

(५) "अगर किसी दोस्त मुल्क में कोई ऐसा नया राजकाजी या समाजी आन्दोलन खड़ा हो जावे जिससे वहां के कच्चे माल के निकालने में या वहां की मंडियों की हिफाज़त में रुकावट पड़ने

का डर हो तो इंग्लैण्ड और अमेरिका को हक़ होगा कि अपनी फौजें भेजकर उस आन्दोलन को दबावे।"

साफ जाहिर है कि इंग्लिस्तान और अमेरिका के पूंजीपतियों की यह चाह, कि वह दुनिया के पिछड़े हुए मुल्कों को अपनी कारबारी लूट का शिकार बनाये रखें और इसीलिये उन पर अपना फौजी दबदबा भी कायम रखें, मिटी नहीं है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की खानेजंगी ने अगर भयंकर रूप धारण किया तो हम इस मामले में पूरी तरह ऐंग्लो-अमेरिकन दल की गोद में जा पड़ेंगे। ऐसी हालत में अगर ऐंग्लो-अमेरिकन दल और रूस का दल इन दोनों दलों में जंग छिड़ गई तो हमारी इच्छा के खिलाफ़ भी सारे हिन्दुस्तान के आदमी और यहां का पैसा और माल रूस के खिलाफ लड़ने में इस्तेमाल किया जावेगा।

हम इंग्लैण्ड या अमरीका को अपना दुश्मन नहीं मानते। उन दोनों देशों की जनता के साथ हमें पूरी हमदर्दी है। रूस और वहां की जनता के साथ हमें वैसी ही हमदर्दी है। हम न किसी को अपना दुश्मन समझते हैं और न किसी से लड़ना चाहते हैं। हममें अभी इतना दम भी कहां? हम सब के साथ सुलह से रहना चाहते हैं। अगर दुनिया की जंग हो तो हम अपने को इससे पूरी तरह अलग रखने की भरसक कोशिश करेंगे। लेकिन, अगर हमें किसी हालत में मजबूर होकर किसी एक दल का साथ देना ही पड़े तो अपने को इस बारे में पूरी तरह आजाद रखना चाहते हैं। इसी में हमारी सलामती और दुनिया का भला है। हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि इस मौके पर हमारी अपनी खानेजंगी और हमारी सब फिरकेवाराना संस्थाएं, चाहे वह हिन्दुओं की हों, सिखों की या मुसलमानों की, हमें जबरदस्ती एक दल की गोद में फेंक रही हैं। हमारे मुल्क की अधकचरी आजादी के लिये इससे बढ़ कर नाश का जरिया नहीं हो सकता।

अपनी इस बात की ताईद में हम कुछ बड़े बड़े विदेशी अखबारों की हाल की राय नीचे दे रहे हैं।

१४ फरवरी को मिश्र की राजधानी काहिरा से यह खबर दुनिया भर में भेजी गई है कि "दिसम्बर सन् १९४७ में इंग्लैण्ड और अमरीका की सरकारों के बीच गुप्त चिट्ठी-पत्री हुई है जिसकी गरज यह है कि यह दोनों सरकारें एशिया की कौमी आजादी की तहरीकों को मिलकर दबावें और उन मुल्कों में अपनी पूंजी लगा और बढ़ा सकें।" इस खबर के मुताबिक "अमरीका का कहना है कि अमरीका की राजकाजी और फौजी मदद से इंग्लैण्ड एशिया के मुल्कों में वहां की पीछे घसीटने वाली ताकतों को बढ़ावा देना चाहता है और उनके जरिये अपने को वहां मजबूत कर लेना चाहता है।" इस पर काहिरा के अखबार "अलमिसरी" ने लिखा है कि—"अरब लोगों को यकीन है कि इंग्लैण्ड और अमरीका का यह पत्र व्यवहार दूसरे मुल्कों की आजादी के लिये सीधे और साफ खतरे की घंटी है।"

९ फरवरी को मास्को से यह खबर आई थी कि रूस के अखबार "मिलिटरी गज़ट" ने लिखा है कि "महात्मा गांधी का कत्ल अंग्रेज साम्राज्यवादियों ने कराया है, जो इससे हिन्दुस्तान में घरेलू जंग बढ़ाना और हिन्दुस्तान को अपनी हुकूमत खुद चला सकने के नाकाबिल साबित करना चाहते हैं।" इस रूसी अखबार के लेखक "ज़ाविच" ने यह भी लिखा है कि "गांधी को इसलिये कत्ल किया गया क्योंकि वह उस ख़ानेजंगी को रोकने के लिये अपनी पूरी ताकत लगा रहे थे जिसे अंग्रेजों ने जान बूझ कर बढ़ाया है।" उस लेख में यह भी लिखा है कि "गांधी जी की मौत ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के लिये यह साबित करने को ज़रुरी थी कि हिन्दुस्तानी न आजादी के काबिल हैं और न उसे निबाह सकते हैं। मुल्क में ख़ानेजंगी को और बढ़ाने के लिये ब्रिटिश साम्राज्यवादी इससे फायदा उठाने की सोच रहे हैं।" मुख्तलिफ़ मुल्कों के तरक्की पसन्द अख़बार यह मान रहे हैं और उनके

यह मानने के लिये काफी वजह हैं कि कातिल के हाथ के पीछे अंग्रेजों के खुफिया आदमी (ब्रिटिश इन्टेलिजेन्ट्स सर्विस) थे।

इसका यह मतलब नहीं कि किसी भी फिरकेवाराना संस्था के सब लोग या महात्मा गांधी के कत्ल की साजिश में हिस्सा लेने वाले सब लोग जान बूझ कर गैरों के हाथों में खेल रहे हैं। इस तरह की चीजें जब बढ़ती हैं तो दोनों तरफ के किस्से और बदले की कुदरती भावनाएं तरह तरह की गलत तालीम, गलत समझ, तंग निगाहों के सहारे पनप कर अपने आप इस तरह की संस्थाएं और साजिशें पैदा कर देती हैं। इस तरह के विचारों और कामों के करने वाले, जाने या अनजाने मुल्क को दुश्मनों के हाथों में फेंक देते हैं। हमें यह भी मालूम है कि हिन्दुस्तान या पाकिस्तान को यह अधकचरी आज़ादी मिलने के बाद से भी ब्रिटिश सरकार के खुफिया बराबर इस देश में अपना काम कर रहे हैं।

हो सकता है कि दोनों सरकारें कोशिश करने पर भी इस आपसी लड़ाई की आफत से न बच सकें। पर आती हुई आफत को देख कर, उसके लिये तैयार रहते हुए भी जहां तक हो सके उसे टालना, बचने की कोशिश करना और आफत आ जाने पर भी उसके फैलाव उसकी दौड़ और उसके बुरे असर को कम से कम हदों में रखना एक बात है और जान बूझ कर आफत को बुलाना और उसे पूरी तरह और उमंग के साथ अपने ऊपर ओढ़ लेना दूसरी बात।

यू० एन० ओ० जैसी पंचायतों से भी हम कोई खास भले की उम्मीद नहीं कर सकते। जर्मन, जापान, दखिणी अफ्रीका, मिस्र, फिलस्तीन जैसे देशों के मामलों में यू० एन० ओ० का रुख हमारी आंखें खोल देने के लिए काफी होना चाहिये।

दोनों की बरबादी

जो लोग हिन्दुस्तान से रहे सहे मुसलमानों या गैर हिन्दुओं को खाली करने की बातें करते रहते है, वह भी दूसरी तरफ के जुल्मों को

सुन सुन कर और कुछ आप बीती की बिना पर गुस्से, नफ़रत और दलबन्दी के असर में, मुल्क और खुद हिन्दुओं के लिये अपने सुझाव के बर्बादकुन नतीजों को नहीं देख पाते।

अक्तूबर सन् ४७ में पश्चिमी और पूर्वी पंजाब दोनों में कई हजार मील का दौरा करके हमने दोनों की हालत को अच्छी तरह देखा। लाहौर की करीब करीब सब तिजारत हिन्दुओं के हाथों में थी। दस्तकारियां और धन्धे भी बहुत से उन्हीं के हाथों में थे। यह चीजें एक दूसरे में इतनी गुथी रहती हैं कि रहे रहे मुसलमान कारीगरों और व्यापारियों को हमने रो कर यह कहते देखा कि उनके अपने कारबार भी एक ग़ैर मालूम अरसे के लिए मटियामेट हो चुके। अमृतसर शहर की चुंगी की आमदनी साढ़े चार लाख सालाना से गिर कर लगभग २५ हजार सालाना तक पहुँच चुकी है। वहां के मुसलमान सौदागर और कारीगर तो मिट ही गए। करीब करीब सब बड़े हिन्दू सौदागरों और कारीगरों ने भी अमृतसर छोड़ कर हमेशा के लिये दिल्ली या बम्बई में डेरे डाल लिये। हिन्दुओं और सिक्खों को निकाल कर पश्चिम पंजाब, और मुसलमानों को निकाल कर पूर्वी पंजाब, दोनों आज अधमरी हालत में पड़े हुए हैं और कम से कम बीस बरस तक कारबारी, तिजारती, माली या समाजी हैसियत से अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सकते। दोनों तरफ की सरकारों और सरकारी अफसरों से बातें करने के बाद हम इस दर्दनाक नतीजे पर पहुँचे हैं। चहार दीवारी के अन्दर का लाहौर और अमृतसर दोनों आज कम या ज्यादा श्मशान दिखाई देते हैं और कोई यकीन के साथ नहीं कह सकता कि इन दोनों में से कोई कब अपनी पुरानी खुशहाली को फिर से पा सकता है। तीस लाख अरब या दूसरे मुसलमानों को अपने यहां से निकालने के बाद तीन सौ बरस तक स्पेन अपना सिर ऊंचा नहीं कर सका और उसके बाद आज तक स्पेन को दुनियां में वह रुतबा नहीं मिला जो इस जुल्म से पहले उसे हासिल था।

पंजाब और उसके आस-पास के इलाके में अस्सी या नब्बे लाख इन्सान एक जगह से उखाड़ कर दूसरी जगह फेंके गए हैं, जिसका नतीजा एक अरसे के लिये सारे पंजाब की बर्बादी है। जिन्दा इन्सानों के इस बदलाव की सबसे मिलती मिसाल हम पूरे बढ़े हुए तनेदार दरख़्तों को एक जगह से उखाड़ कर सैंकड़ों मील दूर दूसरी जगह ले जाकर लगाने की कोशिश से ही दे सकते हैं और वह भी जब कि उन दरख़्तों को बेदर्दी के साथ उखाड़ा गया हो और बीच में जगह जगह धरते पटकते ले जाया गया हो। होशियार माली जब छोटे छोटे नरम पौदों को एक जगह से ले जाकर जब दूसरी जगह लगाता है तो हजार एहतियात और प्रेम के साथ उखाड़ता है और उतनी ही एहतियात और प्रेम से दूसरी जगह लगाता है। फिर भी इन पौधों में से आधे पौधे ही पनपते हैं। इस तरह के बेदर्दी से उखाड़े हुए दरख़्तों में से नब्बे फीसदी मरे बिना या मिटे बिना नहीं रह सकते। जहां वह अभागे जायेंगे वहां रोग ही फैलायेंगे। बर्बादी दोनों तरफ की लाजमी है। जो दरख़्त उस मिट्टी में रह जायेंगे उनकी भी जड़ें हिल चुकी होंगी। अभी तक हिन्दुस्तान में शायद साढ़े तीन या साढ़े चार करोड़ मुसलमान और पाकिस्तान में लगभग सवा करोड़ हिन्दू अपने अपने घरों में रह रहे हैं। बहुत से लोग भूल जाते हैं कि पाकिस्तान में पूर्वी बंगाल भी शामिल है जहां की आबादी सब से घनी और जहां हिन्दुओं की गिनती सबसे ज्यादा है। गान्धी जी की बंगाल की कोशिश ने वहां की हिन्दू मुस्लिम जनता को पंजाब की तरह मिटने से बचा लिया। अगर अस्सी लाख के बदलाव ने पंजाब की सारी जिन्दगी को मटिया-मेट कर दिया तो इन बाकी बचे लगभग ५ करोड़ का बदलाव सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों की ज़िन्दगी को इधर से उधर तक एक बार मटियामेट किये बिना नहीं रह सकता। दुनिया की वे बढ़ी हुई और खून की चाट लगी हुई कौमें, जिन्होंने जैसा हम ऊपर दिखा चुके हैं, हमारी अब तक की कोशिशों और चारों तरफ की हालतों से

मजबूर होकर हमें यह अधकचरी आजादी सौंपी है, उस बदबख़्त दिन को बाट जोह रही है। वह इन्तजार में है कि हमारे मुल्क के जिस्म पर चारों तरफ घाव दिखाई दें और वे गिद्धों की तरह हमारे बचाव के नाम पर हमें चूसने के लिये लपकें। ईरान, ईराक, फिलस्तीन, अरब, मिस्र, चीन, इन्डोनेशिया यहां तक कि जापान और जर्मनी की हालत और इन सब मुल्कों में पश्चिमी ताकतों के चालू हथकण्डे हमारी आंखें खोलने के लिये काफी होने चाहिये। हमारी बचत, हमारी सलामती इसी में है कि हम अपने कमजोर बदन को कहीं भी और ज्यादा घाव लगने से बचावें। हम जहां तक बन पड़े देश भर में प्रेम, इन्सानियत, शान्ति और भाई चारे की जड़ें मजबूत करके ही बच सकते हैं।

गांधी जी ने इस बात को भी बिल्कुल ठीक देख लिया था कि दिल्ली हिन्दुस्तान की दहलीज़ या दूसरे शब्दों में हिन्दुस्तान का दिल है। अगर दिल्ली में मुसलमान न रह सके तो फिर इन पांच करोड़ की उखाड़ पुखाड़ और सारे मुल्क की बरबादी नहीं रुक सकती इसलिए वह दिल्ली को बचाने के लिए मर मिटे।

काश्मीर का मसला

अब जरा काश्मीर पर निगाह डालिये। हम सब काश्मीर को हिन्दुस्तान में मिला लेना चाहते हैं। पर यहां भी काश्मीर के सवाल के सीधे सादे राजकाजी पहलू को हम नहीं देख पाते। काश्मीर की अस्सी फी सदी आबादी मुसलमान है। इनमें ज्यादातर लकड़ी, चमड़े या ऊन के कारीगर हैं। इनके हाथ के बने ऊन के कपड़े सारे हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया भर में चाव के साथ खरीदे जाते हैं। काश्मीर की ऊन की दस्तकारी दुनिया की ऊंची से ऊंची और बड़ी से बड़ी दस्तकारियों में से है। यही वहां के लोगों की रोज़ी का सबसे बड़ा जरिया है। काश्मीर के माल की सबसे बड़ी मण्डी पिछले झगड़ों से पहले अमृतसर थी। उससे उतर कर मण्डियां रावलपिण्डी और दिल्ली थीं। सैकड़ों काश्मीरी कारीगर, दूकानदार, दलाल, एजेन्ट और आढ़तिये

हर साल अमृतसर आते जाते थे और अपनी तिजारत के सिलसिले में महीनों ठहरते थे। आज अगर हम अमृतसर और दिल्ली की सड़कें, यहां के बाजार और यहां की सरायें मुसलमानों के लिए महफूज नहीं कर सकते और नहीं रख सकते तो हम काश्मीर के मुसलमानों को किस मुंह से और किस उम्मीद के साथ पाकिस्तान को छोड़ कर हिन्दुस्तान को अपनाने के लिए कह सकते हैं। काश्मीर और काश्मीरियों को हम तभी अपना कर सकते हैं जब अपने अमृतसर, जालन्धर, दिल्ली और बाकी हिन्दुस्तान में सच्चाई के साथ मुसलमानों को अपनावें।

एशियाई मुल्क और हम

हम काश्मीर के सवाल की और गहरी पेचीदगियों में नहीं जाना चाहते। इतना इशारा काफी है कि मजहबी निगाह से नहीं शुद्ध राज-काजी निगाह से काश्मीर अपना सकना या न अपना सकना, अफगानिस्तान और ईरान को अपना सकना या न अपना सकना है और अफगानिस्तान, ईरान और दूसरे पच्छिमी एशियाई देशों को दोस्त या दुश्मन बनाना रूस को दोस्त या दुश्मन बनाना है। कौमों के गठजोड़ बन्धे हुए हैं। उनमें अदल बदल भी हो सकते हैं। पर सारे हिन्दुस्तान की किस्मत बहुत दरजे तक पच्छिमी एशिया और सोवियट रूस की किस्मत के साथ बन्धी हुई है। कुछ नासमझ लोग अपनी फिरकेवाराना तंग-नजरी से अंधे हो कर चीन से मिल कर मुस्लिम मुल्कों को जीतने की भी बात करने लगते हैं। इस तरह की राजकाजी बूझ बुझक्कड़ किसी दूसरे मुल्क में होते तो हम उनके भोलेपन पर हंस सकते थे। पर हमारे मुल्क के लिए यह भोलापन इस वक्त हमारे जान के लाले साबित हो रहा है। चीन अपनी गहरी मुसीबतों में गिरफ्तार है। तब भी चीन में किसी की निगाह इतनी बेमानी और बेतुकी नहीं है। हमें याद है कि हमारे मित्र बरमा के रेवरेण्ड उत्तमा ने हिन्दू सभा का सदर होना स्वीकार करके इस बात पर हिन्दू महा

सभा से हाथ खींचा था कि उन्हें यह जान कर अचरज हुआ कि हिन्दुस्तान के मुसलमान 'हिन्दू' नहीं माने जाते।

दूसरे एशियाई देशों में भी हर तरह की पार्टियां हैं। हर पिछड़ा हुआ देश पच्छिम की बड़ी बड़ी ताकतों की खेंचा-तानी का अखाड़ा बना हुआ है। पर हमें यह जानना चाहिये कि हिन्दुस्तान से बाहर की इस्लामी हकूमतें और वहां के लोग बहुत बड़े दर्जे तक सदियों पहले की दकियानूसी मजहबी तंग नजरी से बाहर निकल चुके। इसके सिवा उनके लिए जीने का कोई भी रास्ता नहीं था। इसकी मिसालें यहां देने की जरूरत नहीं है। हिन्दुस्तान में हमारी दोनों तरफ की तंगनजरी, एक दूसरे की तंगनजरी का नतीजा और उसकी उपज है। इस महारोग से ऊपर उठे बिना हमारी जान नहीं बच सकती।

अपने हाथों अपनी बरबादी

पाकिस्तान, मिस्टर जिन्ना या लीग ने क्या किया यह कह कर अपनी तंग नज़री को जायज़ ठहराना ऐसा ही है जैसा यह कि अगर कोई एक तरफ से हमारे घर को जलाने लगे तो हम दूसरी तरफ से मशाल ले कर घर को भस्म कर देने में लग जावें। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बंटवारे का हवाला देकर दो-नेशन के सिद्धांत को खुद मान लेना और 'हिन्दू राष्ट्र' और 'हिन्दू राज' की बातें करना, मुल्क के दुश्मनों के हाथों में खेलना और अपने को आप बरबाद कर लेना है। इसका नतीजा है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच की दीवार को मजबूत करना और नई दीवारों को खड़ा होने का मौका देना। देश को फिर से एक करने, जिन्दा रखने और खुशहाल बनाने का तरीका इन तंग निगाहों से ऊपर उठना है।

बहुत से लोग हिन्दुस्तान के मुसलमानों या पाकिस्तान के हिन्दुओं की वफादारी पर शक प्रकट करते रहते हैं और मौके बे-मौके उनसे वफादारी की कसमें लेना या वफादारी का ऐलान कराने की बात

करते रहते हैं। इस तरह की बातें न तो करने वालों को शोभा देती हैं और न किसी में वफादारी या खुद्दारी पैदा कर सकती हैं और ज्यादा अजीब बात यह है कि जो लोग इस तरह की बातें करते हैं, उनमें से बहुत से ऐसे हैं जो खुद या जिनके सगे नातेदार अभी कल तक विदेशी अंग्रेज सरकार की नौकरियां किया करते थे। बहुत से ऐसे महकमों में काम करते थे जिनसे देश की आजादी चाहने वालों और उनकी कोशिशों को साफ धक्का पहुँचता था। देश के साथ वफादारी और बेवफाई का ठेका कभी भी किसी एक धर्म वालों ने नहीं लिया। आज भी अगर कोई पाकिस्तान के मुसलमानों या हिंदुस्तान के हिन्दुओं में अपने यहां की सरकारों के खिलाफ देशघातक तैयार करना चाहे तो हमें लज्जा के साथ मानना पड़ेगा कि यह कोई कठिन काम नहीं है। ब्रिटिश सरकार की खुफिया पुलिस, उसकी वह कचहरियां जिन्होंने देशभक्तों को सजायें दीं और उसके वे जेलखाने जिन्होंने आजादी के मतवालों को बन्द कर रखा या फांसियां तक दीं, सदा हिन्दू, मुसलमान और सिख सबसे भरे रहे हैं। अपने सगे रिश्तेदार पृथ्वीराज के साथ दगा करने वाला जयचन्द, सिराजुद्दौला को धोका देने वाला अमीचन्द, अपने देश और मालिक के साथ छल करके पंजाब को अंग्रेजों के हाथ में सौंपने वाले तेजसिंह और लालसिंह और वह दोनों भाई जगत सेठ जिन्होंने आज से २०० वर्ष पहले चांदी के टुकड़ों के बदले में बंगाल को अंग्रेजों के हाथ बेच कर इस देश में अंग्रेजी राज की नींव डाली, मुसलमान न थे। हिन्दुस्तान का इतिहास इस तरह की मिसालों से भरा पड़ा है जिनमें देश के रहने वाले मुसलमानों ने अपने हिन्दू देश भाइयोंके साथ कन्धे से कन्धा मिला कर डट कर बाहर से आने वाले मुसलमान हमलावरों का मुकाबला किया। देशघातक और देशभक्त सब जगह सब धर्मों के लोगों में पैदा होते रहे हैं और पैदा होते रहेंगे। हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज का इतिहास भी इस तरह की दोनों तरफ की मिसालों से भरा हुआ है। हैदरअली और

टीपू सुलतान अगर देश की आजादी के लिए लड़ते लड़ते प्राण दे सकते थे तो सम्राट बहादुरशाह का समधी मिरजा इलाही बख्श बूढ़े सम्राट के साथ दगा करके दिल्ली अंग्रेजों के हवाले कर सकता था। शिवा जी और रानी लक्ष्मीबाई दोनों की फौजों में मुसलमान अफसर और मुसलमान सिपाही मौजूद थे जिन्होंने मरते दम तक अपने हम मजहबों के खिलाफ अपने मालिक का साथ दिया। १७६१ की पानीपत की लड़ाई में अहमदशाह अब्दाली के मुकाबले के लिए मरहटों का साथ देने को लखनऊ का नवाब, वजीर और उनकी सेना का फरा का फरा डटा हुआ था। इधर के तीस बरस के आन्दोलनों में भी हिन्दू देशभक्तों और मुसलमान देशभक्तों, हिन्दू देशघातकों और मुसलमान देशघातकों, हिन्दू जांनिसारों और मुसलमान जाँ निसारों की मिसालें भरी पड़ी हैं। किसी ब्राह्मण लड़के या महाराष्ट्री लड़के के महात्मा गांधी की हत्या करने की वजह से या बहुत महाराष्ट्रियों के साजिश में शामिल होने की वजह से भी आम ब्राह्मणों या आम महाराष्ट्रियों से वफादारी की कसमें नहीं ली जा सकतीं। वफादारी दिल की चीज है और आपस के प्रेम, मेल मिलाप, अच्छे सलूक, देश की शांति और खुशहाली पर निर्भर है। आज कल की बेएतबारी और बदअमनी की हालत में जो मुसलमान घबरा कर हिन्दुस्तान से पाकिस्तान जाने के लिये तैयार हो जाते हैं, या जो हिन्दू पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आने के लिए तैयार दिखाई देते हैं उनके ऐसा करने से अपने यहां की सरकार से बेवफ़ाई का सबूत समझना भी उनकी मुसीबतों में आंख बन्द करना और दोनों तरफ के ज्यादा तादाद वाले लोगों के पापों पर पर्दा डालना है। हमें इसमें जरा भी शक नहीं और सारा इतिहास इस बात का गवाह है कि एक बार दोनों तरफ सच्ची शांति और अमन आमान हो जाने पर हिन्दुस्तान के मुसलमान पाकिस्तान की तरफ से हमले को और पाकिस्तान के हिन्दू हिन्दुस्तान की तरफ से हमले को अपने जान माल, अपने बाल बच्चों

और अपने सुख चैन पर हमला समझेंगे और वैसा ही बर्ताव करेंगे। किसी भी संकट के समय हर सरकार अपने दोस्त और दुश्मन को पहचान कर उसके साथ मुनासिब बर्ताव करना जानती हैं। किसी भी लाचारी से फायदा उठाकर कर जो कसमें ली जावें उनकी कोई कीमत नहीं होती। यह रास्ता दिलों को और दूर कर देने का रास्ता है। दूसरे की लाचारी की हालत में सच्चा एहसान और सच्चा प्रेम दिलों को नज़दीक लाता है और दिलों में एक दूसरे की वफादारी के अकुवे पैदा करता है।

यह है हमारी इस वक्त की हालत का राजकाजी पहलू।

: २ :

धार्मिक पहलू

अब हम इस पहलू से हटकर इस सवाल को धर्म या मजहब की निगाह से देखना चाहते हैं। दुर्भाग्य से आज हमारे देश में सब से ज्यादा मुसीबतें धर्म और मजहब ही के नाम पर ढाई जा रही हैं। सब से पहला सवाल यह है कि धर्म या मजहब है क्या चीज और इसका इनसान की जिन्दगी के साथ क्या सम्बन्ध है।

धर्म क्या है ?

संस्कृत शब्द धर्म "धृ" धातु से निकला है जिस के मानी धारण करना यानी सम्हालना या सम्हाले रखना है। संस्कृत की धर्म की किताबों में जगह जगह यह बताया गया है कि धर्म क्या चीज है और

उसके क्या लक्षण हैं। मिसाल के लिये महाभारत में एक जगह जाजलि ने ऋषि से पूछा कि धर्म क्या है। ऋषि ने जवाब दिया—

धारणाद्धर्म इत्याहु धर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद्धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः॥
अहिंसार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्।
यः स्यादहिंसया युक्तः स धर्म इति निश्चयः॥
प्रभवार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्।
यः स्यात्प्रभवसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः॥
सर्वेषां यः सुहृन्नित्यं सर्वेषां च हिते रतः।
कर्मणा मनसा वाचा स धर्मः वेद जाजले॥

यानी धर्म शब्द धारण से बना है, धर्म से ही सब लोग सम्हले हुए हैं। जो चीज सब को सम्हाले और मिलाये रक्खे—वही धर्म है, यह पक्की बात है।

किसी प्राणी को किसी तरह का दुःख न पहुँचे, इसके लिए धर्म का बखान किया गया है। जिस बात से किसी को भी दुःख न पहुँचे—वही धर्म है, यह पक्की बात है।

सब प्राणियों के भले के लिये धर्म का बखान किया गया है। जिस काम से सबका भला हो—उसी को धर्म जानो, यह पक्की बात है।

जो आदमी हमेशा दिल से सबका भला चाहता है और अपने कामों से, मन से और वचन से सबका भला करने में लगा रहता है। हे जाजलि! वही धर्म का जानने वाला है।

हिन्दू धर्म

आखिर की दो लाइनें जो सारे श्लोक का इत्र हैं, सोने के हरफों में लिखने लायक है। यही विचार तरह तरह के रूपों में हिन्दू धर्म की सब किताबों में बारबार दोहराया गया है। हिन्दू धर्म इनसानी ज़िन्दगी पर

एक खास तरह की निगाह का नाम है। किसी खास मत, संप्रदाय या फिरके का नहीं। हिन्दू धर्म एक उदार, ऊंची और सबको अपने घेरे में समा लेने वाली चीज है। हिन्दू धर्म कोई तंग चीज नहीं है। दुनिया के दूसरे धर्मों या मजहबों की तरह हिन्दू धर्म की बेशुमार किताबों में भी तरह तरह की रस्मों और रीति रिवाजों का जिक्र मिलेगा। पर ऋग्वेद से लेकर भागवद्गीता तक जहां कहीं भी धर्म की तारीफ की गई है, कहीं भी किसी रीति रिवाज को धर्म नहीं कहा गया। एक खास बात तो यह है कि हिन्दू धर्म की किसी किताब में भी इस धर्म का नाम 'हिन्दू धर्म' नहीं है। संस्कृत की धर्म पुस्तकों में भी हिन्दू शब्द नहीं मिलता। जहां कहीं इस धर्म को कोई नाम दिया गया है वहां भी उसे सिर्फ 'मानव धर्म' यानी मनुष्य का धर्म या इनसानियत का मजहब ही कहा गया है। यही हमारे पांच हजार वर्ष के इतिहास से साबित है। इस देश में तरह तरह के रीति रिवाजों और पूजापाठ के सब अलग अलग तरीकों के मानने वालों के लिये गुंजायश रही है। हिन्दू शब्द किसी खास रीति-रिवाज या किसी खास मानता को जाहिर नहीं करता। यह शब्द आज से लगभग दो हजार वर्ष पहले विदेशी यूनानियों और ईरानियों ने इस देश के रहने वालों के लिये इस्तेमाल करना शुरू किया था और सच पूछिये तो यह देश को जाहिर करता है, किसी खास मजहबी विचार को नहीं। सिन्धु नदी को 'सिन्धु' और 'हिन्दू' दोनों नामों से पुकारा जाता था। इसी लिये बाहर के लोग इस नदी के पार रहने वाले सब लोगों को 'हिंदू' नाम से पुकारने लगे। हिन्दू शब्द पहले पहल इन्हीं मानों में यूनानियों की किताबों में मिलता है। उसी सिलसिले में आज तक अमरीका में इस देश के सब रहने वालों को, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान या कोई और, हिंदू कहा जाता है और हिन्दू ही लिखा जाता है। जो मुसलमान यहां से हज्ज करने के लिये मक्का जाते हैं, उन्हें भी बाहर के मुसलिम देशों में 'हिंदी' या 'हिंदू' दोनों नामों से पुकारा जाता है। इसलाम की सबसे बड़ी

यूनिवर्सिटी मिश्र की राजधानी काहिरा में है। उस यूनिवर्सिटी में हिन्दुस्तान से जाने वाले मुसलमान तालिबइल्मों के लिये एक खास बोर्डिंग-हाउस है जिसे "हिंदू बोर्डिंग हाउस" कहा जाता है।

जहां तक देश के अन्दर का सवाल है आज तक वह वैष्णव, जो किसी तरह का भी गोश्त खाना सबसे बड़ा पाप मानता है और वह शाक्त, जिसकी पूजा बिना गोश्त के नहीं हो सकती—दोनों एक बराबर हिन्दू हैं। हर चीज में ब्रह्म यानी खुदा को देखने वाला वेदान्ती और ईश्वर से ही इन्कार करने वाला चार्वाक का पैरो दोनों एक बराबर हिन्दू हैं। ऐसे ही मूर्ति पूजक सनातन धर्मी और मूर्ति पूजा को पाप मानने वाला आर्यसमाजी दोनों एक से हिन्दू हैं। हम फिर दोहराते हैं कि हिन्दू धर्म किसी ऊपरी रीति रिवाज या किसी तंग मानता या किसी मूढ़ विश्वास का नाम नहीं है।

तो फिर हिन्दू धर्म है क्या चीज़? ऊपर हम महाभारत का हवाला दे चुके हैं। दूसरे हिन्दू धर्मग्रन्थों में सबसे मशहूर और मानी हुई धर्म की तारीफ मनु महाराज के बताए हुए धर्म के दस लक्षण हैं। मनुस्मृति में लिखा है—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

यानी—धीरज, सबके कसूर माफ़ करना, अपनी खुदी को दबाना, दूसरे का हक न छीनना, सफाई, अपनी इन्द्रियों यानी नफ़्स पर काबू, समझ, जानकारी, सचाई और गुस्सा न करना यही धर्म की दस पहचान हैं। यह है हिन्दू धर्म का सार। इनमें कहीं भी किसी रीति रिवाज, पूजा पाठ, ऊपरी निशान या किसी ख़ास मानता का ज़िक्र नहीं है। इनसानी जिन्दगी के यह वह ऊंचे असूल हैं जिनसे किसी भी धर्म या मज़हब का मानने वाला इन्कार नहीं कर सकता। इसी तरह के बेशुमार हवाले हिन्दू धर्म की दूसरी पुस्तकों से दिये जा सकते हैं।

हिन्दू धर्म का बख़ान करने वालों ने इतने पर ही तसल्ली नहीं

की। दुनियां के कम समझ लोगों के लिए उन्होंने जगह जगह यह भी साफ कर दिया कि अलग अलग रीति रिवाज़ों का धर्म के साथ क्या सम्बन्ध है। महाभारत का कहना है—

गवामनेकवर्णानां क्षीरस्यास्त्येकवर्णता ।
क्षीरं पश्यते ज्ञानी लिङ्गिना तु गवां यथा ॥

यानी—गाय अलग अलग रंगों की होती है, पर दूध सबका एक ही रंग का होता है। जो समझदार लोग है वे दूध के रंग को देखते हैं और जो ऊपर की निशानियों और रीति-रिवाज़ों में फंसे हुए हैं वह गायों के रंग को देखते हैं।

जिसे हिन्दू धर्म कहा जा सकता है उसका सबसे पक्का और आखिरी रूप उपनिषदों और भगवद्गीता में बयान किया गया है। ये पुस्तकें ही हिन्दू धर्म के चोटी के फूल कही जा सकती हैं? उपनिषदों में कहीं भी किसी रीति-रिवाज या ऊपरी निशानी को धर्म का आवश्यक अंग नहीं माना गया। उपनिषदों में बार बार कहा गया है कि—"जो आदमी सब प्राणियों को अपनी तरह देखता है, सबके अन्दर अपने को और अपने अन्दर सबको देखता है—वही देखने वाला और वही धर्मात्मा है।" (ईश)

भगवद्गीता सब उपनिषदों का निचोड़ है। हिन्दू मात्र के लिये गीताधर्म की ख़ास किताब है। गीता के समय में भी तरह तरह के रीति-रिवाज़ और पूजा पाठ के अलग अलग तरीके इस देश में पैदा हो चुके थे। उन सबको गैर ज़रूरी बताते हुए उनके बारे में गीता का कहना यही है कि—

"जो जिस तरह भगवान को मानते हैं, भगवान उसी तरह उनको मिलते हैं। लोग अलग अलग रास्तों से चल कर भी उसी एक परमेश्वर तक पहुँचते हैं (४–११)।

इस देश की सबसे बड़ी कुचाल जिसने सारे देश को घुन की तरह लग कर उसे विनाश के गड्ढे तक पहुँचा दिया और जो सारे

'साम्प्रदायिकता' और हमारी सारी मुसीबतों की असली जड़ है, जन्म से जात पात और छुआछूत है। गीता इसे जड़ मूल से गलत मानती है। गीता का कहना है—

"विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥" (५–१८)

यानी–जो आदमी विद्वान् और शरीफ ब्राह्मण को, गाय को और हाथी को, कुत्ते को और चण्डाल को सबको एक निगाह से देखे, वही पण्डित है ।

आखिरी अध्याय में गीता ने साफ कहा है कि—"सब धर्मों को छोड़ कर सिर्फ एक ईश्वर में मन को लगाना ही पाप से बचने का एकमात्र तरीका है। (१८–६६) इस श्लोक में धर्म शब्द से मतलब धर्म के नाम पर उन तरह तरह के रीति-रिवाजों से है जिनका जिक्र अर्जुन ने गीता के पहले अध्याय में 'जाति धर्मों' और 'कुल धर्मों' (१–४०,४३) के नाम से किया है । यानी गीता का उपदेश यह है कि इस तरह के सब पुराने (१–४०,४३) रीतिरिवाजों और ऊपर के मजहबी फर्कों को छोड़ कर, उनसे ऊपर उठ कर आदमी को सिर्फ दूसरों के साथ नेकी करना और एक ईश्वर की तरफ ही ध्यान लगाना चाहिए ।

असली धर्म गीता के मुताबिक है क्या चीज ? गीता के अपने शब्दों में असली और पूरा धर्म यह है—

"जो आदमी अपने आप पर काबू पाकर अपनी इन्द्रियों यानी नफ्स को जीत कर दुई यानी गैरियत से ऊपर उठ कर अपने निजी सुख दुःख, नफे नुकसान की बिल्कुल परवाह न करते हुए सब दुनिया का भला चाहते हुए किसी से दुश्मनी या बैर न रखते हुए सबके भले के कामों में लगे हुए दूसरों की तरफ अपने फ़र्ज को समझ कर पूरा करता है वही धर्मात्मा है । नरक के तीन दरवाजे हैं–काम, क्रोध और लोभ । ईश्वर को सबसे

ज़्यादा प्यारा वह आदमी है जिससे दुनियां में कोई आदमी न डरता हो और न जिसे खुद किसी से किसी तरह का डर हो। इस तरह अपनी खुदी को मार कर दूसरों की तरफ अपने फ़र्जों को पूरा करने में लगे हुए, सबकी भलाई करते हुए ही आदमी सच्चे ज्ञान को पा सकता है। सच्चा ज्ञान यही है कि आदमी सबको अपनी तरह, अपने अन्दर सबको, सबको ईश्वर के अन्दर और सबके अन्दर एक ईश्वर को देखे। सिर्फ इस तरह अपने ऊपर काबू और दूसरों की सेवा के जरिये ही आदमी अपनी आत्मा को पाक करते करते, आत्मा की असली तरक़्क़ी के रास्ते पर क़दम बढ़ा सकता है और फिर अन्दर उस परमात्मा को साक्षात् करके, यानी उसका दीदार हासिल करके, जो सब रोशनियों की रोशनी है और सबके दिलों में बैठा हुआ है, मुक्ति यानी निजात हासिल कर सकता है। (२–३८; ३–१९, २५; ५–७, १६, १७, २५, ३०; ६–२९, ३०, ३१, ३२; ११–५५; १२–८, १५; १३–१७; १५–१५; १६–२५; १८–६०;)

यह है गीता धर्म का और इसीलिए हिन्दू धर्म का निचोड़ और सब रीति रिवाज़ और ऊपरी फ़रक़ गीता के मुताबिक छोड़ देने की चीजें हैं। (१८–६६)

दूसरे शब्दों में सबके साथ नेकी, अपने ऊपर काबू और सबके अन्दर बैठे हुए भगवान की तरफ निगाह और ख़याल को ले जाने की कोशिश करना, यही हिन्दू धर्म है। आज सदियों से सैकड़ों तरह के अच्छे बुरे रीति रिवाज़ों, ऊपरी निशानियों और पापों ने इस धर्म को ढग रक्खा है। यही हमारी सारी गुमराही और मुसीबतों की जड़ है।

इस्लाम

हिन्दू धर्म के इस गिरावट के ज़माने में ही इस्लाम का इस देश में आना हुआ। जिस तरह हिन्दू धर्म की असली अच्छाइयां, ऊंचाइयां और उसमें बाद में आई हुई बुराइयां और तंग नज़रियां थीं, उसी

तरह इस्लाम में भी, जिस शकल में वह हमारे देश में आया, अपनी खूबियां और बुराइयां, ऊंचाइयां और तंग नज़रियां दोनों मौजूद थीं। दुनियां के हर मज़हब का असली रूप उस मज़हब के मानने वालों की गलतियों और कमज़ोरियों की वजह से धीरे धीरे हमेशा से बदलता और बिगड़ता रहा है। यहां तक कि अक्सर हर मज़हब के नाम लेवा अपने मजहब के बुनियादी असूलों से कोसों दूर हट जाते हैं और बिलकुल उलटा ही चलने लगते हैं। यहां हम इसलाम की बुनियादी तालीम और उसकी बाद की शकल में तफसील से नहीं जा सकते।

मजहब शब्द के माने रास्ता, पथ, पंथ या मार्ग है। दीन शब्द के माने रास्ता भी है और सजा या जाजा यानी कर्मों के फल भी हैं।

इसलाम के बारे में जहां तक कुरान की तालीम और मुहम्मद साहब की जिंदगी और उनके उपदेशों का सवाल है, इसलाम किसी एक तंग फिरके या सम्प्रदाय का नाम नहीं है। कुरान में कुछ बातें बहुत साफ साफ और बार बार कही गयी हैं—

पहली यह कि सब इन्सान एक कौम हैं।

"सब इन्सान एक ही 'वाहिद उम्मत' यानी एक ही कौम हैं।"
(२—२१३)

"और तमाम इन्सान इसके सिवा और कुछ नहीं हैं कि सब एक ही कौम (वाहिद उम्मद) है।" (१०—१९)

"सचमुच तुम इन्सानों की एक ही कौम है और एक ही अल्लाह तुम सबका रब्ब है। इसलिये सब उसी की पूजा इबादत करो। लोगों ने काट काट कर अपने अलग अलग गिरोह बना रक्खे हैं। पर सबको एक ही अल्लाह के पास जाना है।" (२१—९२, ९३)

मुहम्मद साहब जब आधी रात को उठकर नमाज़ पढ़ा करते थे तो हमेशा नमाज़ से पहले यह फ़िकरा कहा करते थे:—

"ऐ अल्लाह मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह एक और सब आदमी भाई भाई हैं।"

यहां 'सब आदमी' में मुसलमान, गैर मुसलमान या अच्छे बुरे का फ़र्क़ नहीं किया गया।

दूसरी चीज़ जो कुरान में बार बार दोहराई गई है, यह है कि मोहम्मद साहब से पहले भी हर मुल्क और हर क़ौम में रसूल होते रहे हैं—

"और हर क़ौम में रसूल हुए हैं।" (१०—४७)

"हर क़ौम में धर्म का रास्ता बताने वाले पैदा हुए हैं।" (१३—७)

"इसमें कोई भी शक नहीं कि तुम से पहले अल्लाह ने सब कौमों में रसूल भेजे हैं। (१४—४)

"और जो रसूल जिस क़ौम में भेजा गया है वह उसी क़ौम की बोली में पैग़ाम लेकर भेजा गया है ताकि उन्हें साफ़ साफ़ समझा सके।" (१४—४)

कुरान के मुताबिक़ किसी रसूल को मानना और किसी को न मानना या रसूलों में फ़रक़ करना, किसी को बड़ा और किसी को छोटा मानना—'कुफ्र' यानी नाशुकरायन है।

"सचमुच जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों को नहीं मानते और जो अल्लाह और उनके रसूलों में फ़रक़ करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम कुछ रसूलों को मानते हैं और कुछ नहीं मानते और इनके बीच से एक अलग ही रास्ता बना लेना चाहते हैं, यह लोग ही सच्चे क़ाफिर यानी नाशुकरे हैं और अल्लाह ने इनके लिये ज़िल्लत की सज़ा तय कर रखी है। (४—१५०, १५१)

तीसरी चीज़ कुरान आने से पहले की सब मज़हबी किताबों को भी अपनी ही तरह ठीक मानता है—

"यह कुरान वह सच्चाई है जो आने से पहले की मज़हबी किताबों की तसदीक करती है यानी उन सबको सच बताती है।" (२—९१)

'अल्लाह ने अपने पास के असल ज्ञान में से जो कुछ ज्ञान तुम्हें (मोहम्मद साहब को) वही (ईश्वर प्रेरणा) के ज़रिये दिया है वह वह सच्चाई है जो आने से पहले की धर्म पुस्तकों की तसदीक करती है।" (३५—३१)

"और तुम्हें यानी मोहम्मद साहब को कोई ऐसी बात नहीं कही गई जो सचमुच तुमसे पहले के रसूलों को न कही गई हो।"

(४१—४३)

चौथी चीज़ जो कुरान की तालीम में साफ चमकती है वह है कि सचाई का ठेका दुनिया के किसी एक मज़हब ने नहीं ले रखा बल्कि दुनिया के सब बड़े बड़े मज़हबों की असली तालीम एक है।

"यहूदी कहते हैं कि सिवाय यहूदियों के और कोई जन्नत में नहीं जा सकता। ईसाई कहते हैं कि सिवा ईसाई के कोई जन्नत में नहीं जा सकता। यह सब इन लोगों के झूठे वहम हैं। इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो (अपनी ही मज़हबी किताबों से) सबूत निकाल कर दिखाओ। नहीं, जिस किसी ने अपने आपको अल्लाह की मरजी पर छोड़ दिया है और जो दूसरों के साथ नेकी करता है उसे अपने रब से फल मिलेगा, उसे न किसी का डर है और न किसी तरह का ग़म होगा।" (२—१११, ११२)

"इसमें कोई शक नहीं कि वह चाहे वे लोग हों जो इस कुरान पर ईमान लाये हैं और चाहे वे हों जो यहूदी हैं या वे हों जो ईसाई हैं या वे हों जो साबी हैं या कोई भी हो, जो कोई भी अल्लाह को मानता है और आख़िरत में यानी अपने कामों के फल में यक़ीन करता है और नेक काम करता है, उन सबको अपने रब से फल मिलेगा। उन्हें न किसी बात का डर है और न किसी तरह का अफसोस होगा।" (२—६२)

साबी उस ज़माने के अरब के एक और मज़हब का नाम है। कुरान के मशहूर और माने हुए अंग्रेज़ी तरजुमा करने वाले अब्दुल्ला

यूसुफ अली साहब ने इस आयत का तरजुमा करते हुए साबी शब्द की बाबत लिखा है कि—"मैं समझता हूँ कि इस मामले में इस शब्द के अन्दर जरथुस्त्र, वेद, बुद्ध, कन्फूसे और धर्म के और सब महान उपदेशकों के पीछे सच्चाई से चलने वाले सब लोग शामिल हैं।"

अलग अलग मज़हबों और उनकी किताबों और रीति-रिवाजों की तरफ कुरान का रुख नीचे की आयत में बिल्कुल साफ हो जाता है—

"अल्लाह ने तुम पर यानी मोहम्मद साहब पर यह किताब (कुरान) उतारी है जो सच्ची है।

यह उन किताबों को सच्चा ठहराती है जो इससे पहले आ चुकी हैं और जो सब उस असली किताब यानी ज्ञान में से ली गई हैं जो अल्लाह ही के पास है। यह किताब कुरान उन सब अपने से पहले की किताबों की हिफ़ाज़त करती है। इसलिये अल्लाह ने जो कुछ ज्ञान तुम्हें दिया है उसीसे उनके बीच फैसला करो और लोगों के वहमों में पड़कर उस सच्चाई से न फिरो जो तुम पर उतरी है। अल्लाह ने हर एक के लिये अलग अलग शरह और मिनहाज यानी अलग अलग रीति रिवाज और पूजा के तरीके बना दिये हैं। अल्लाह चाहता तो सब को एक ही फिरका यानी एक ही रीति रिवाज के पालने वाला बना देता। लेकिन, अल्लाह चाहता था कि जिसको जो तरीका बता दिया है उसी में उसको परखे। इसलिये (इन फिरकों में न पड़कर) दूसरों की भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो। सबको अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है। तब जिन बातों में तुम में फ़रक है, वह अल्लाह तुम्हें समझा देगा।" (५-४८)

"मज़हब के मामले में किसी के साथ कोई जबरदस्ती नहीं होनी चाहिये।" (२-२५६)

पाँचवीं चीज़ कुरान में सच्चाई, सबके साथ नेकी और इन्साफ वगैरह पर जोर देते हुए जगह जगह बताया गया है कि असली दीन

या मजहब नेकी है, कोई रीति रिवाज नहीं—

"धर्म या नेकी इस में नहीं है कि तुमने अपना मुंह नमाज के वक्त पूरब की तरफ कर लिया या पश्चिम की तरफ। धर्म यह है कि आदमी अल्लाह को माने, आखरत यानी कर्मों के फल को माने, फरिश्तों (यानी आदमी के दिल के अन्दर के नेक रुजहावों) को माने, सब मजहबी किताबों और अगले पिछले सब रसूलों को माने, अल्लाह के प्रेम के नाते अपने माल और दौलत में से अपने नाते दारों को, यतीमों को, जरूरत मन्दों को, राह चलतों को और मांगने वालों को दान दे और गुलामों को आजाद कराने में अपनी दौलत खर्च करे, अल्लाह से दुआ मांगता रहे, ज़कात यानी गरीबों को खैरात देता रहे, जब कभी किसी से वादा करे तो उसे पूरा करे और मुसीबतों में, तकलीफ में और सख्ती के दिनों में सब्र करे। जो लोग ऐसा करते हैं वही सच्चे हैं और वही मुत्तकी यानी परहेजगार हैं।" (२-१७७)

"लोगों को सिवा इसके और कुछ हुकुम नहीं दिया गया कि वे पाक दिल से अल्लाह से दुआ मांगते रहें और गरीबों को दान दें, यही असली और पक्का दीन है।" (१८-४)

"क्या तुमने सोचा है कि दीन को झूठा ठहराने वाला आदमी कौन है? दीन को झूठा ठहराने वाला आदमी वह है जो किसी यतीम को सताता है और गरीबों को खाना देने पर जोर नहीं देता। ऐसे आदमी जब नमाज पढ़ते हैं तो उन पर अफसोस होता है, क्योंकि वे नमाज के असली मतलब की तरफ ध्यान नहीं देते। वह सिर्फ दिखावा करते हैं और ख़ैरात से हाथ रोकते हैं।" (१०७ १ से ७)

"बुराई का बदला भलाई से दो। अल्लाह खूब जानता है कि लोग क्या चाहते हैं।" (२३-६६)

मोहम्मद साहब से बार बार पूछा जाता था—इस्लाम क्या है? और ईमान क्या है? उनका जवाब हमेशा एक ही तर्ज का होता था—

अम्र लिखता है, मैंने पैगम्बर से पूछा "इस्लाम क्या है?" उन्होंने

जवाब दिया—जबान को पाक रखना और मेहमान की खातिर करना। मैंने पूछा—"ईमान क्या है?" उन्होंने जवाब दिया—"सब्र करना और दूसरों की भलाई करना।" (अहमद)

मोहम्मद साहब ने एक जगह कहा है—

'मोमीन वह है जिसके हाथों में सब आदमी अपनी जान और माल को सौंप बे खटके रहें।" (बुखारी)

एक और जगह कहा है—

"अगर मोमीन होना चाहता है तो अपने पड़ोसी का भला कर और अगर मुस्लिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिये अच्छा समझता है वही सब के लिये समझ और बहुत मत हंस, क्योंकि सचमुच ज्यादा हंसने से दिल सख्त हो जाता है।" (तिरमिजी)

मोहम्मद साहब के इस तरह के कौल अनगिनत नकल किये जा सकते हैं।

"इस्लाम" के लफ्जी माने हैं—अपने को अल्लाह की मरजी पर छोड़ देना। मुसलमान के लफ़्ज़ी माने हैं—वह जिसने अपने आपको अल्लाह की मरजी पर छोड़ दिया हो यानी ईश्वरार्पण कर दिया हो कुरान के लफ़्ज़ी माने हैं—कोई चीज जो पढ़ी जावे या ऐलान की जावे। कुरान में जगह जगह मोहम्मद साहब से पहले के सब दूसरे बड़े धर्मों को 'इस्लाम' और उनके मानने वालों को "मुस्लिम" या "मुसलमान" कह कर पुकारा गया है। (२४—७८ वगैरह) इसी कुरान में कुरान से पहले की मजहबी यानी ईश्वरीय किताबों को भी 'कुरान' नाम दिया गया है और उन लोगों को, जिन्हों ने इन सब ईश्वरीय किताबो को अलग अलग करके ईश्वरीय ज्ञान के "टुकड़े टुकड़े कर डाले" "मुफ़्तरेमीन" यानी फूट डाने वाले कहा गया है। (१५-९०,९१)

हमारा मतलब यहां इस चीज से नहीं है कि दुनिया के मुसलमान कब किस देश में क्या मानते, कहते या करते रहे हैं। हमारा मतलब सिर्फ़ कुरान के असली और बुनियादी असूलों और इस्लाम के पैगम्बर

के उपदेशों से है।

जिस तरह इस्लाम के हिन्दुस्तान में पहुँचने के वक्त हिन्दू धर्म अपनी लगभग सारी ऊंचाई और बड़ाई को खोकर जातपात, छुआछूत आदमी आदमी में ऊंच नीच और तरह तरह के पाखण्डों झूठी मानताओं और घातक रीतिरिवाजों में फँसा हुआ था, उसी तरह इस्लाम भी इस देश में पहुँचते पहुँचते और फैलते फैलते तरह तरह की गलत मानताओं, कुरीतियों और तंगनजरियों से घिर गया था। खास कर राज पाट का जामा पहन कर, ताकत के नशे में, कहीं कहीं इस्लाम अपनी पाकी और दरिया दिली खोकर जुल्म और हठधर्मी की चीज बन गया।

गिरावट

सच यह है कि जिस तरह हरद्वार की गंगा और कलकत्ते की गंगा में आकाश पाताल का अन्तर है इसी तरह दुनिया के सब मजहबों में समय के साथ साथ गिरावट आती रही है। हिन्दू धर्म की बुनियाद सब प्राणियों के अन्दर एक ही ईश्वर का वजूद है। पर हिन्दू धर्म से बढ़कर ऊंच नीच और छुआछूत शायद दुनिया के किसी धर्म में नहीं मानी जाती। महात्मा बुद्ध से ज्यादा मूर्तिपूजा का खण्डन किसी दूसरे महा-पुरुष ने नहीं किया पर खुद बुद्ध की मूर्तियों से ज्यादा मूर्तियां भी दुनिया में किसी की न बनी, न पुजी; यहां तक कि खुद 'बुत' शब्द ही 'बुद्ध' से बिगड़ कर बना है। हजरत ईसा ने सब से ज्यादा अहिंसा का उपदेश दिया पर उनके पीछे चलने वाली ईसाई कौमों से बढ़कर इन्सानों का खून किसी दूसरे मजहब वालों ने नहीं बहाया। मोहम्मद साहब ने कब्र पूजने ही को नहीं, अपने किसी प्यारे तक की कब्र बनाने तक को गुनाह बताया है, पर मुसलमानों से ज्यादा कब्रों की पूजा किसी मजहब के लोग नहीं करते। और मिसालें देने की जरूरत नहीं है। किसी भी मजहब को उस मजहब से बाहर के लोग न गिरा सकते हैं,

न नीचा दिखा सकते हैं और न नुकसान पहुँचा सकते हैं। हर मजहब को गिराने, नीचा दिखाने या नुकसान पहुँचाने का काम हमेशा उस मजहब के नामलेवा और उसका दम भरने वाले ही करते रहे हैं।

बात यह है कि बुनियादी सचाइयां सब मजहबों में एक हैं। ईश्वर अल्लाह एक है, चाहे उसे किसी नाम से पुकारो। सब आदमी भाई भाई हैं। इस दुनिया में और उस दुनिया में हमारा सबका भला नेकी, सचाई, इन्साफ, ईमानदारी और एक दूसरे की भलाई के उन असूलों पर अमल करने में है जो आदमी ने लाखों बरस के कड़वे तजरबों से सीखे हैं और जो सब मजहबों की किताबों में पाये जाते हैं। फरक पैदा होता है उन छोटी मोटी मानताओं, हठधर्मियों, रीति रिवाजों, पूजा बन्दगी के अलग अलग तरीकों और ऊपरी अलामतों में, जो देश, काल और हालात की बिना पर अलग अलग मजहबों में अलग अलग शकलें ले लेते हैं। मजहब में झगड़े तभी होते हैं जब इन मजहबों के मानने वाले जिन्दगी के असल असूलों और बुनियादी सचाइयों को कम जरूरी और इन सब ऊपर की चीजों को ज्यादा जरूरी मानने लगते हैं। हम मजहबी रूह या आत्मा को अलग करके उसके मुर्दा जिस्म को चिपटे रहना चाहते हैं, जिसका कुदरती नतीजा है बीमारी और मौत।

सुधार की कोशिशें

१५ वीं सदी के शुरू इस देश में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों की करीब करीब यही हालत हो चुकी थी। ऐसे मौकों पर ही सुधारकों या नए राह दिखाने वालों की जरूरत पड़ती है। चुनाचे १५ वीं, १६ वीं और १७ वीं सदी में इस देश के अन्दर कबीर, नानक दादू, बुल्लेशाह, यारी साहब, दरिया साहब, रैदास, तुकाराम, बाबा फरीद, पीपा, सदना, मुईनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, बाबा मलूकदास, जैसे सैकड़ों हिन्दू और मुसलमान सूफी सन्त, महात्मा और फकीर ईश्वर के सच्चे भक्त पैदा हुए, जिन्होंने हमें मज़हब की ऊपरी चीजों

और रीति रिवाजों से हटाकर बुनियादी असूलों की तरफ ले जाना चाहा, जिन्होंने हमें सब धर्म मज़हबों की बुनियादी एकता का पाठ पढ़ाया। हमें बताया कि असली धर्म या मज़हब एक है। दोनों मज़हबों की कुरीतियों, तंग नजरियों और कुचालों पर खुले हमले किये और एक बार इस देश में प्रेम के वह सोते बहाये जिनके सामने बड़े-बड़े बादशाहों को भी सर झुकाना पड़ा। हम यहां इन महापुरुषों के दर्शाये हुए प्रेम-धर्म, मज़हबे इश्क, मानव धर्म या मजहबे इन्सानियत का ज़्यादा बखान नहीं कर सकते। यूं तो इस देश का बच्चा-बच्चा इन महापुरुषों की बानी और उपदेशों से थोड़ा बहुत जानकारी रखता है। नीचे हम इनके थोड़े बहुत कौल बतौर नमूने के दे देना चाहते हैं।

अपने जमाने के हिन्दू मुसलमानों की झूठी बहसों की तरफ इशारा करते हुए कबीर साहब ने कहा है—

भाई रे! दुई जगदीश कहाते आया, कहो कौने भरमाया
अल्लाह, राम, करीमा, केशो, हरि, हज़रत नाम धराया
गहना एक कनक ते गहना, इन मंह भाव न दूजा
कहन सुनन को दोऊकर थापिन, इक नमाज़ इक पूजा

मन्दिर और मस्जिद के फरक को बयान करते हुए कबीर साहब ने कहा है—

जो खुदाय महजीद बसतु है, अवर मुलुक केहि केरा
तीरथ मूरत राम निवासी, दुई मँह किनहुँ न हेरा
पूरब दिसा हरि को बासा, पच्छिम अलह मुकामा
दिल मँह खोज दिलहि मँह खोजो, इहै करीमा रामा
वेद कतेब कहो किन झूठा, झूठा जो न बिचारे
सब घट एक एक कर जाने, वै दूजा केहिं मारे
जेते औरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा
कबीर पोंगरा अलह राम का, सो गुरु पीर हमारा

दादू ने कहा है—

अलह राम छूटा भ्रम मोरा
हिन्दू तुरक भेद कुछु नाहीं, देखौं दरसन तोरा

....

सब हम देख्या सोधि करि, दूजा नाहीं आन
सब घट एकै आतमा, क्या हिन्दू मुसलमान

.. ..

दोनो भाई हाथ पग, दोनों भाई कान
दोनो भाई नैन है, हिन्दू मुसलमान

मन्दिर और मस्जिद के बारे में दादू ने कहा है—

आप चिणावे देहुंरा, तिसका करहि जतन
परतखि परमेसुर किया सो मानै जीव रतन
मसीत संवारी मान सों तिसकूँ करै सलाम
ऐन आप पैदा किया सो ढावै मुसलमान

(यानी जिस मन्दिर को हिन्दू अपने हाथों से चुनते हैं उसकी तो बड़ी देख रेख करते हैं, पर आदमी का बदन जो खुद ईश्वर का बनाया हुआ मन्दिर है, उसे तोड़ डालते हैं। इसी तरह मुसलमान आदमी की बनाई हुई मस्जिद की तो इज्जत करते हैं और ख़ुद ख़ुदा की बनाई हुई इमारत यानी आदमी के बदन को ढा देते हैं)।

इसी तरह के ख्याल उस ज़माने के मुसलमान सूफियों और फ़कीरों के कलाम में भरे पड़े हैं। एक सूफी का कहना है—

दिल बदस्त आवर कि हज्जे अकबरस्त
अज़ हजारां काबा यक दिल बे हतरस।
काबा बुनगाहे ख़लीले आज़र अस्त
दिल गुज़र गाहे जलीले अकबरस्त

यानी—किसी का दिल, उसका भला करके अपने हाथ में ले। यही सब से बड़ी हज्ज है। हजारों काबों से एक दिल बढ़कर है। यह

पत्थर का काबा आज़र के बेटे खलील का बनाया हुआ है और आदमी का दिल ख़ुद उस परमेश्वर के आने जाने की जगह है।

शेख सादी ने कहा है—

यूं अज़ दर्दं आज़ाद करदी कसे
बेह अज़ अल्फ़ रक अतब हर मंज़िले

यानी अगर तू किसी एक आदमी की तकलीफ़ को भी दूर करदे तो यह ज़्यादा अच्छा काम है बजाय इसके कि तू हज्ज को जाये और रास्ते के हर पड़ाव में एक एक हज़ार रकत नमाज़ पढ़ता जाये।

इस्लाम के ऊपरी रीति रिवाजों से घबरा कर एक और सूफी का कहना है—

मय ख़ुरो मुसहफ़ बेसोज़ो आतिश अन्दर काबाज़न
हरचे ख़ाही कुन व लेकिन मर्दुम आज़ादी मकुन

यानी शराब पी, किताब जलादे, काबे में आग लगादे, जो तेरे दिल में आये सो कर, सिर्फ़ एक काम न कर—किसी का दिल न दुखा।

सच यह है कि यही इस्लाम की चोटी का फूल है। यही ऊंचे से ऊंचा दीन, धर्म या मज़हब है। यही उपनिषदों, गीता और क़ुरान का निचोड़ है। इसका मतलब यह नहीं कि सूफी किसी को शराब पीने या क़ुरान जलाने या काबे में आग लगाने का उपदेश देता है। सूफ़ी सिर्फ़ मज़हब को ऊपरी चीज़ों से हटाकर मज़हब के जौहर की तरफ़ ध्यान दिलाना चाहता है। ज़ाहिर है कि जो आदमी इस बात का ध्यान रक्खेगा कि उसके किसी काम से किसी आदमी का दिल न दुखे वह न कभी शराब पी सकता है, न किसी धर्म की किताब को जला सकता है और न किसी मन्दिर, मस्जिद; काबे, काशी में आग लगा सकता है।

हिन्दुस्तान के मशहूर मुस्लिमसन्त अमीर ख़ुसरो का मशहूर शेर है—

काफ़िरे इश्कम मुसलमानी मरा दरकार नेस्त

हर गे मन तार गिश्ता हाजते ज़ुन्नार नेस्त

यानी मैं प्रेम का पुजारी हूँ । मुझे तुम्हारे ऊपरी इस्लाम की ज़रूरत नहीं है । प्रेम ने मेरी रग रग को तार तार कर दिया है, मुझे तुम्हारे ऊपरी धागों के जनेऊ की ज़रूरत नहीं ।

इस तरह के क़ौल उस ज़माने के सूफ़ियों की बानी में भरे पड़े हैं । यह प्रेम के मतवाले हिन्दू मुसलमान को अलग अलग करने वाली दीवारों को तोड़ कर उनसे ऊपर उठ चुके थे और दुनिया को उठाना चाहते थे, या यूं कहिये कि दुनिया को सच्चे हिन्दू धर्म और सच्चे इस्लाम की तरफ लाना चाहते थे । रीति रिवाजों के पुजारी तंग नज़र लोग जब इनसे सवाल करते थे तो यह जवाब देते थे—

तूही बता दे, ज़ाहिद ! क्या कहूँ मैं अपने को
तू कहे गब्र मुझे, गब्र मुसलमां मुझ को

ऐ रीति रिवाज के पुजारी मुसलमान ! तू ही बता दे मैं अपने को क्या कहूँ, तू कहता है मैं हिन्दू हो गया और हिन्दू कहता है कि मैं मुसलमान हूँ ।

धर्म मज़हब के मामले में आज हमारी मुसीबतों की सबसे बड़ी जड़ यह है कि वह हिन्दू बड़े और छोटे जो अपने धर्म और धर्मकी किताबों से वाक़िफ़ हैं और वह मुसलमान जो अपने ईमान और अमल दोनों में इस्लाम से कोसों दूर हैं, आज हमारे दोनों के मज़हबी हिन्दू धर्म के रक्षक और इस्लाम के मोहफ़िज़ बने हुए हैं । यही वजह है कि हम ग़लत क़िस्म की राजकाजी दल बन्दियों के चक्कर में पड़कर ग़ैरों के बिछाए हुए जाल में फँसे हैं, फँसते जा रहे हैं, खुद अपनी बेड़ियों को अपने हाथों से कस रहे हैं और देश और धर्म दोनों को मट्टी में मिला रहे हैं ।

सिख धर्म

धर्म के मामले में हमारे अनजानेपन की तो यह हालत होगई

है कि वह सिख धर्म जिसका जन्म ही इस देश में इस्लाम के आने के बाद हुआ और जो हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के संगम के रूप में दोनो को मिलाने के लिये आया था, आज अपनी अलग गंगा बहा बैठा। गुरु नानक से लेकर गुरु गोबिन्दसिंह तक सब गुरुओं की बानी को पढ़ जाइये। आपको उनमें एक ही सर्व-धर्म-समभाव, सब धर्मों के मेल और एकता की बात दिखाई देगी। आदि ग्रन्थ और दशम ग्रन्थ दोनों इस प्रेम के अमृत से भरे पड़े हैं। गुरु नानक ने अपने को हिन्दू कहने से साफ इन्कार किया।

उनके शब्द हैं—

ना हम हिन्दू ना हम मुसलमाँ
दोनों विच्च बसे शैतान
एको, एकी एक सुमान
तगा न हिन्दू पाइया
तगा न मूसलमान
दोऊ भूले राह ते
ग़ालिब भया शतान
बन्दे इक्क खुदाय दे
हिन्दू मूसलमान
दावा राम रसूल कर
लड़दे बेईमान

गुरु नानक की बानी में यह थोड़ा सा कड़वापन प्रेम का कड़वापन है। अपने ज़माने के रीति-रिवाज़ के जंजाल और शब्दों और नाम रूप की बहस में फँसे हुए हिन्दु मुसलमानों की हालत से दुखी होकर यह शब्द उनके मुख से निकले। आज ऐसे सिक्ख भाई भी हैं जो महात्मा गांधी की प्रार्थना में क़ुरान के पढ़े जाने पर अल्लाह नाम आने पर नाराज़ होते हैं। उन्हें शायद यह भी ध्यान नहीं कि गुरु ग्रन्थ साहब अल्लाह नाम से शुरू होता और भगवान के लिये अल्लाह नाम ग्रन्थ

साहब में बार बार और जगह जगह आया है—

अव्वल अल्लह नूर उपाया
कुदरत दे सब बन्दे
इक नूर ते सब जग उपज्या
कौन भले कौन मन्दे

आदि ग्रन्थ में सिक्ख गुरुओं की बानी के अलावा अनेक सन्तों और कम से कम चार मुसलमान सन्तों की बानी प्रम के साथ जमा की गई हैं। गुरु अर्जुन देव को जब अमृतसर के गुरुद्वारे की नींव रखाने की ज़रुरत पड़ी तो उन्होंने इस पाक काम के लिये मुसलमान फ़क़ीर साईं मियां मीर से प्रार्थना की। गुरुद्वारे की नींव साईं मियां मीर ही के हाथों की रखी हुई है। सब धर्मों की एकता की यह भावना जिस तरह आदि ग्रन्थ में है ठीक उसी तरह दशम ग्रन्थ में है। इस बारे में गुरु नानक और गुरु गोबिन्दसिंह के विचारों में कोई फ़रक़ नहीं।

गुरु गोबिन्द सिंह का मशहूर पद है—

कोई भयो मुंडिया सन्यासी कोऊ योगी भयो
कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतिपन मानबो
हिन्दू तुरुक कोऊ, राफ़ज़ी, इमाम, शाफ़ा
मानस की जाति सबै इक्कै पहचानबो
करता करीम सोई, राज़िक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई, भूल भ्रम मानबो
एक ही की सेव, सबही को गुरुदेव एक
एक ही सरुप, सबै एकै जोत जानबो
देहुरा मसीत सोई, पूजा और नमाज़ ओई
मानस सबै एक पै अनेक को प्रभाव है
देवता अदेव जच्छ गन्धर्व तुरुक हिन्दू
न्यारे न्यारे देसन के भेसन को प्रभाव है

एक नैन एकै कान एकै देह एकै बानि
खाकबाद आतिश औ आब को रलाव है
अल्लाह अभेद सोई, पुराण औ कुरान ओई
एक ही सरुप सबै, एक ही बनाव है

हमें विश्वास है कि अगर पंजाब, बल्कि सारा हिन्दुस्तान, सिर्फ गुरु नानक ही की बताई हुई राह पर चला होता, तो आज इस देश में मज़हब के नाम पर इन्सानियत को शरमा देने वाले पापों और अपने हाथों इस बरबादी का बाजार गरम न हुआ होता। उपनिषदों का 'अद्वैत वाद' पुराणों का 'विष्णु सहस्रनाम'—जिनमें सहस्र के मानी हैं बेअन्त, कबीर साहब का 'कबीर पोंगरा अलह राम का' गुरु नानक का 'अव्वल अल्लाह नूर उपाया' और महात्मा गांधी का 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' सब एक ही सनातन सचाई की गूंज हैं।

कुछ अजीब विचार

आज हिन्दू धर्म के नाम पर कई अजीब अजीब तरह के विचार हम में चल पड़े हैं। कुछ भाई कहने लगे हैं कि जिन लोगों के तीर्थ स्थान या पाक मुक़ाम इस देश से बाहर हैं या जो बाहर के किसी महा-पुरुष या राह दिखाने वाले के पैरों हैं, वह इस देश के बराबर के हक़दार शहरी नहीं हो सकते। जो लोग 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के मानने वाले थे, यानी जो इस सारी धरती को अपना घर और इस धरती के रहने वालों को अपना कुटुम्ब मानते थे, उनके अन्दर यह तंगी हमारी गिरावट की बड़ी दर्दनाक अलामत है। अगर दुनियां के सब देश इसी तंग असूल के मानने वाले होते तो वह बौद्ध धर्म जिसके चलाने वाले महात्मा बुद्ध हिन्दुस्तान में पैदा हुए थे और जिसका सबसे पाक स्थान गया इस देश में है, चीन, जापान, और आधी दुनिया में न फैल पाता और न कोई बौद्ध धर्म का मानने वाला वहां का हक़दार शहरी हो पाता। 'मित्र धर्म'' ने जिसकी जड़ें ऋग्वेद के देवता 'मित्र'

की पूजा में थी, एक समय सारे पच्छिमी एशिया और आधे से ज्यादा यूरोप को अपने घेरे में ले रखा था। हज़रत ईसा एशिया में पैदा हुए, यहीं उनकी सारी उमर बीती, एशिया ही में ईसाइयों का सबसे पाक तीर्थ है; पर इस बिना पर न कभी ईसाई यूरोप या अमरीका के देशों से निकाले गए, न निकाले जा सकते हैं। दुनिया का कोई देश सभ्य, मुहज्ज़ब या 'सिविलाइज्ड' कहलाने का हकदार नहीं है, जिसमें पूरी मज़हबी आज़ादी नहीं, यानी हर आदमी को हर वक्त यह अधिकार न हो कि वह जिस धर्म को चाहे माने और जिस तरह चाहे अपने भगवान की पूजा करे या न करे। हिन्दुस्तान इन मानों में हमेशा एक सभ्य देश रहा है और रहेगा। यह अलग बात है कि जो जिस देश में रहेगा, उस देश का सदा भला सोचना उसका फर्ज है। जो भी किसी देश में रह कर वहां के किसी नियम कानून को तोड़ेगा, उसे अपने किये को भुगतना होगा; चाहे वह उस देश के पैदा हुए किसी धर्म का मानने वाला हो और चाहे बाहर के पैदा हुए किसी धर्म का।

संस्कृति का सही रूप

सभ्यता या तहज़ीब की बात आई, तो हमारा ध्यान एक और चीज की तरफ जा रहा है। हमारे इस अभागे देश में ख़ास कर हाल के दिनों में हिन्दू संस्कृति या हिन्दू कलचर को बचाए रखने और मुस्लिम संस्कृति या मुस्लिम कलचर को बचाने के चरचे भी खूब हो चुके हैं। हमें बड़े दुःख और लज्जा के साथ कहना पड़ता है कि कहीं कहीं तो ये चरचे भी इन लोगों ने सबसे ज़्यादा किये; जिनमें और कोई भी अच्छी या बुरी बात रही हो या न रही हो, कम से कम हिंदू कलचर और मुस्लिम कलचर की अलामतें बहुत ही कम दिखाई देती थीं।

कलचर का मज़मून भी इतना बड़ा है कि इस पर अलग किताब की जरूरत है और किताबें हैं। फिर भी संस्कृति और कलचर दोनों शब्दों की पैदाइश और उनकी बनावट से ज़ाहिर है कि संस्कृति और

कलचर हमेशा दो चीज़ों के मेल से पैदा होती है। चालू हिन्दू धर्म के अनुसार आदमी संस्कार होने पर यानी कुछ ऐसे गुणों के मिलने पर, जो जन्म से उसमें नहीं होते थे, द्विज या द्विजन्मा कहलाता है। मामूली चूसने का आम बीजू आम कहलाता है, कलमी आम कलचर्ड या कलचर हुआ आम कहा जाता है। यही बात ऐग्रीकलचर, हौर्टीकलचर, सैरीकलचर और तरह तरह की कलचरों में है। किसी भी देश की कलचर में उस देश वालों की धार्मिक और नैतिक जिन्दगी, उनका सदाचार, इखलाक़, उनकी बोली-साहित्य, उनके रहने-सहने उठने-बैठने के ढंग, उनके कपड़े, उनके मकान, उनके खेल तमाशे, उनके खाने पीने की चीजें, उन की चित्रकारी, उनकी दस्तकारियां, उनकी तबीयतों के शौक़ और झुकाव सब शामिल समझे जाते हैं।

मजहब की तरह कलचर में भी दो मोटे पहलू होते हैं—एक बुनियादी असूल और दूसरे उन असूलों को रूप देने वाले तौर तरीके और बाहरी चीज़ें। इन में असूल फिर सब कलचरों के एक दरजे तक एक हैं, एक होने चाहिएँ और जहां तक उन में फ़रक़ है उन सबको मिला कर दुनिया को एक इन्सानी कलचर, मानव संस्कृति और सच्चे भाईचारे की तरफ जाना चाहिये। जहां तक तौर तरीकों और ऊपर की चीज़ों की बात है, इनमें देश, काल और हालत के साथ साथ फ़रक़ होना क़ुदरती चीज़ है। इस फ़रक़ में भी तीन बातें ध्यान देने की हैं। एक यह कि यह फ़रक़ मज़हब की बिना पर कम और मुल्क की बिना पर ज़्यादा होते हैं। कलचर के इन मानों में जितना फ़रक़ लाहौर के हिंदू और बनारस के हिन्दू में है, इतना लाहौर के हिन्दू और लाहौर के मुसलमान में या बनारस के हिन्दू और बनारस के मुसलमान में नहीं। दूसरे यह कि इन फ़रक़ों को अगर रवादारी, उदारता, प्रेम और जिन्दा दिली से देखा जावे, तो यह फ़रक़ इन्सानों की जिन्दगी के अमन और सुख को कम करने की जगह उन्हें बेहद बढ़ा लेने का सामान बन सकते हैं। सारी इन्सानी कौम की ज़िन्दगी को यह वैसा ही मालामाल और

खुशहाल कर सकते हैं और उसकी शोभा को बढ़ा सकते हैं, जैसे एक बड़े बाग़ के अन्दर तरह तरह के फल और रंगबिरंगे फूल। तीसरी यह कि इन ऊपरी चीज़ों में भी दुनिया मेल और संगम की तरफ जा रही है। इस तरह की चीज़ों और तौर तरीकों में सदा से देश देश के अन्दर वह क़लमें लगती रही हैं, जिन्होंने हर देश वालों की ज़िन्दगी को एक मिले जुले ताने बाने की तरह पूर रक्खा है और जिन में से अलग अलग देशों या क़ौमों की कलचरों को अलग अलग करने की कोशिश इस सारे ताने बाने को तार तार कर के बरबाद कर देने के बराबर होगी।

इन मानों में जो लोग हिन्दू कलचर और मुस्लिम कलचर को अलग अलग बचा कर रखने और अछूता रखने की बात करते हैं, उन्हें इस बात का शायद अन्दाज़ा नहीं है कि हिन्दुस्तानी समन्दर में गिर कर एक हो जाने वाले इन किसी समय की अलग अलग कलचरों,—आर्य कलचर, द्रविड़ कलचर, यूनानी कलचर, ईरानी कलचर, चीनी कलचर, अरब कलचर, राजपूत कलचर, मुगल कलचर वग़ैरा का मेल जोल किस हद तक पहुँच चुका है। शुद्ध हिन्दू संस्कृति का दिलदादा कौन ऐसा आदमी होगा, जो गेहूँ की फसल को और उसके इस्तेमाल को इसलिये देश से निकाल दे, क्योंकि गेहूँ आज से लगभग २३ सौ बरस पहले यूनानियों के साथ हिन्दुस्तान आया था? ऋग्वेद में तिल, चावल, जौ का बयान मिलता है, गेहूँ का नहीं। गेहूँ उन दिनों आर्य लोगों का खाना नहीं था। गेहूँ के संस्कृत नामों में से दो नाम 'यवन प्रिय' और 'म्लेच्छ प्रिय' भी हैं। जहां तक हमें मालूम है, शायद किसी हिन्दू-धर्म-कार्य में गेहूँ काम में नहीं लाया जाता। जो कपड़े हम आज कल पहन रहे हैं या जो पचास बरस पहले पहनते थे, सब मुल्क मुल्क और क़ौम क़ौम के पैबन्दों से बने हैं। संस्कृत की पुरानी किताबों में उन कपड़ों का बयान मिलता है, जो महर्षि बाल्मीक के समय में या महाभारत के समय में या और समय समय पर इस देश में पहने जाते

थे। आज उनमें से बहुत से कपड़ों को कोई हिन्दू मर्द पहन कर घर से बाहर निकलने की ढिठाई नहीं कर सकता। कौन समझदार हिन्दू गुलाब की क्यारियों को अपने बगीचे से इसलिये नोच कर फेंक देगा, क्योंकि गुलाब की कलम मुगलों के जमाने में ईरान से आई थी? यही हालत हमारे सैंकड़ों सुन्दर से सुन्दर, मीठे से मीठे और प्यारे से प्यारे फलों, फूलों, जानवरों और आये दिन के बरतने की चीज़ों की है। ऐसे ही कौन मुसलमान होगा, जो इसलिये पान चबाना या क़लाक़न्द खाना बन्द कर दे, क्योंकि यह दोनों चीजें हिन्दुस्तानी हैं, अरब, इरान या किसी बाहर के मुस्लिम देश में नहीं होतीं और मुसलमानों ने हिन्दुस्तान में आकर इनका इस्तेमाल सीखा। इस तरह की अनगिनत मिसालें हमारी जिन्दगी में भरी पड़ी हैं।

इन आये दिन की चीजों से लेकर अगर हम कला, चित्रकारी, तरह तरह की दस्तकारी, संगीत और साहित्य, यहां तक कि धार्मिक समझे जाने वाले रीति रिवाजों पर निगाह डालें, तो हमें इस मेल जोल की इससे भी ज्यादा शानदार मिसालें कदम कदम पर मिलेंगी। हम यहां सिर्फ एक ठोस मिसाल देकर बस करेंगे। तामीर का हुनर यानी मकान के बनाने में सुन्दरता लाने की कला आदमी के शौक की खास चीजों में से है। सच पूछिये तो इन सब चीजो में फरक मुल्कों मुल्कों ही के होते हैं, मजहबों के नहीं। कलचर को भी अगर ध्यान से देखा जावे, तो हिन्दुस्तानी कलचर, ईरानी कलचर, यूनानी कलचर और अरब कलचर के कुछ मानी हैं, हिन्दू कलचर और मुस्लिम कलचर नाम की इस मानी में कुछ चीजें नहीं। अक्सर हम पुरानी हिन्दुस्तानी कलचर को हिन्दू कलचर और पुरानी अरब कलचर को मुस्लिम कलचर कह बैठते हैं। घर बनाने की कला में इस निगाह से अगर हमें हिन्दू कलचर के अच्छे से अच्छे नमूने देखने हों, तो दक्खिन के पुराने मन्दिर, कुर्सी के ऊपर कुर्सी, कंगूरे के ऊपर कंगूरा, ऊंचा कलश, धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों के नकशे चारों तरफ ऊपर से नीचे तक इस तरह घने खुदे हुए कि

जिन्हें देखकर आदमी को तुरन्त हिन्दुस्तान के घने बनों और वहां की घनी आबादी को याद आ जावे। दूसरी तरफ अगर मुस्लिम कलचर या अरब कलचर के अच्छे से अच्छे नमूने देखने हों, तो दिल्ली और अजमेर की मस्जिदें, आसमान से बात करती हुई मीनारें, भारी गोल गुम्बद, अनगिनत महराबें, और अन्दर बाहर का तमाम हिस्सा अरब के रेगिस्तान की तरह सफ़ाचट्ट। तीसरी तरफ अगर इन दोनों कलचरों, इन दोनों संस्कृति के आदर्शों के प्रेमालिंगन, उनके बगलगीर होने को देखना हो, तो आगरे का ताजमहल है, जो अपनी कला और अपनी सुन्दरता की निगाह से आज भी दुनिया के कलाकारों को चकाचौंध कर रहा है और इस देश के जर्जर बदन पर झूमर की तरह चमक रहा है। इसी तरह की बेशुमार प्यारी मिसालें हमें अपने संगीत, अपनी चित्रकला और जिन्दगी के दूसरे अच्छे से अच्छे पहलुओं में मिलेंगी। सच यह है कि इन सब चीज़ों में दुनियां एक आलमगीर आर्ट, एक विश्व कलचर और उस मिली जुली जिन्दगी की तरफ जा रही है, जिस पर दुनिया के सब धर्मों, सब विद्याओं और सब महापुरुषों की टकटकी लगी हुई है और जिसके बिना "वसुधैव कुटुम्बकम्" यानी दुनिया के सब इन्सानों को एक खानदान बनाने का सपना पूरा नहीं हो सकता। इस धरती के ऊपर इस सपने को पूरा करना ही सारे धर्म, मजहब, कलचर और संस्कृति का लक्ष या मक़सद है। इसके ख़िलाफ़ जाने की सारी कोशिशें आदमी आदमी में फूट डालने वाली, बरबादी करने वाली और पाप हैं।

इसके लिये सब से पहली जरूरत है एक दूसरे के साथ पूरी रवादारी, विचारों, मानताओं और पूजा पाठ के तरीकों में सब के लिये पूरी आजादी, सबके साथ इन्साफ और इन्सानी भाईचारे की जड़ों को मजबूत करने की। इसके बिना धर्म, कलचर या संस्कृति का दुनिया में फल-फूल सकना नामुमकिन है। हमारे देश के हिन्दू, मुसलमान सिक्ख और सब भाइयों को भी संस्कृति या कलचर के मामले में इसी ध्येय या मकसद को हर वक्त अपने सामने रखना चाहिये।

इतिहासी पहलू

●

आखिर में हम इस सारे सवाल के तीसरे पहलू यानी उन इतिहासी या तारीखी ग़लतफ़हमियों की तरफ़ आते हैं, जो हमारी इस सारी बीमारी की एक दरजे तक जड़ है।

इतिहास की तोड़-मरोड़

पिछले सौ सवा सौ बरस से जो जो तरीके इस देश में फूट फैलाने के हमारे विदेशी अंग्रेज़ हाकिमों ने ईजाद किये और बरते हैं, उनमें एक ज़बरदस्त तरीक़ा हमारे पिछले इतिहास को तोड़ मोड़ कर और ग़लत रंग देकर हमारे सामने रखना है। पिछली तीन पीढ़ियों से हिन्दुस्तान की जो तारीख़ हमारे स्कूलों और कालिजों में पढ़ाई जाती

रही है, उसने हिन्दू और मुसलमान बच्चों के दिलों में एक दूसरे से नफरत के वह बीज बोए हैं, जिनसे धीरे धीरे फूलते फलते अंग्रेज़ी कूटचालों की मदद से आज इस देश में यह नौबत पहुँच गई है। यहां हम केवल दो एक मिसालें देंगे। मशहूर और माने हुए इतिहास लेखक सर जानके ने लिखा है—

"हम लोगों में यह रिवाज़ है कि जब किसी देसी राजा, महाराजा या नवाब का राज हम उससे छीन लेते हैं, तो उसके बाद उस राजा, महाराजा या नवाब पर या उस आदमी पर जो उसके बाद उसकी गद्दी पर बैठने वाला था, झूठे कलंक लगाकर उन्हें बदनाम करते है।" (हिस्ट्री ऑफ दी सेपौय वार, जिल्द ३ पृष्ठ ३६१—३६२)।

जिस सिराजुद्दौला ने अपने नाना अलीवर्दी खां की आखरी वसीयत पर चल कर तख्त पर बैठने के दिन से मरने की घड़ी तक कभी शराब को हाथ न लगाया था* और जिस के पाक चलन की उस समय के स्क्रेफ्टन जैसे बहुत से अंग्रेज़ लेखक दिल से तारीफ़ करते हैं, उसे बाद की अंग्रेजी किताबों में पहले दरजे का शराबी और दुराचारी बयान किया गया है।

बेवरिज साहब ने अपनी हिन्दुस्तान की तारीख़ में झांसी की उस महारानी लक्ष्मीबाई का, जिसकी पाक जिन्दगी और ऊंचे चरित्र की उस जमाने के बड़े छोटे सब अंग्रेज लेखक एक आवाज़ से तारीफ़ करते हैं और जो एक आदर्श हिन्दू बेवा थी, अपनी किताब हिन्दुस्तान के इतिहास में जो तस्वीर खींची है, उसमें महारानी लक्ष्मीबाई को शराब और हुक्के का आदी दिखाया गया है।

सिन्ध का जो अमीर मीर रूस्तम खां ८५ साल से ऊपर उमर पाकर अंग्रेजों की पूना जेल में मरा और जिसकी परहेज़गारी, पाक जिन्दगी और नेक चलनी की उन सब अंग्रेज अफ़सरों ने पूरी तरह तारीफ़ की है, जिन्हें कभी उसके साथ रहने का मौका मिला, जिसकी

* "बांगलार इतिहास, नवाबी आयल" लेखक—कालीप्रसन्न वन्द्योपाध्याय

बाबत पूना का अंग्रेज सिविल सर्जन डा० पियर्ट लिखता है कि "मीर रूस्तम खां ने सिवा पानी या दूध के कभी और कोई चीज नहीं पी, उसे "दी कांक्वेस्ट आफ सिन्ध" नाम की मशहूर किताब के लेखक सर विलियम नेपियर ने अपनी किताब में शराबी, भंगेड़ी और अय्याश बयान किया है।

हम यहां इस तरह की मिसालों को बढ़ाना नहीं चाहते। मीर क़ासिम, हैदरअली, टीपू सुलतान, नन्दकुमार, वाजिदलि शाह, रनजीतसिंह वग़ैरा सबके साथ यही बेइन्साफी की गई है। इस बेइन्साफी की वजह से एक तरफ तो हम अपने उन बहादुर देशभक्तों और देश के ख़ादिमों की क़द्र न कर सके, जिन्होंने इस देश की आजादी के लिये समय समय पर कोशिशें कीं और जानें दीं। दूसरे इन झूठे बयानों ने हिन्दुओं और मुसलमानों के दिलों को भी एक दूसरे से फाड़ा।

इससे कहीं ज़्यादा जहर मुस्लिम जमाने की ग़लत और यकतरफा तारीख़ हमारे सामने रख कर हमें एक दूसरे के ख़िलाफ किया गया। हम यह नहीं कहते कि मुसलमान बादशाहों ने अत्याचार नहीं किये। हम यह भी नहीं कहते कि सब मुसलमान बादशाह या हाकिम मजहबी तास्सुब से ऊपर थे। हम इतिहास के किसी जुल्म या ग़लती को ढकना या छिपाना भी नहीं चाहते। पर जो इतिहास हमें पढ़ाया गया है, उसमें इस तरह के जुल्म और ग़लतियों को बढ़ा कर और रंग कर बयान किया गया है और आपस के अच्छे बरताव और मेल जोल के पहलुओं को दबाया गया है।

औरंगजेब

सब से ज़्यादा बदनाम मुगल सम्राट औरङ्गजेब ही को लीजिये। औरङ्गजेब से ग़लतियां हुईं। एक बड़े दरजे तक उन ग़लतियों ही की बदौलत मुग़ल राज के टुकड़े टुकड़े होकर खात्मा हुआ और इस मुल्क को ग़ैरों की गुलामी के कड़वे तजरबे में से निकलना पड़ा। हम यहां

इन ग़लतियों की तफसील में नहीं जा सकते । हम सिर्फ़ एक दो मोटी मोटी बातों की तरफ़ पढ़ने वालों का ध्यान खींचना चाहते हैं। जिस औरङ्गजेब ने मथुरा, अयोध्या और बनारस के तीन मशहूर मन्दिर गिरवाए, उसी औरङ्गजेब ने बीजापुर की शानदार जामा मस्जिद को इसलिये अपने सामने खड़े होकर एक एक ईंट निकलवा कर जमीन से मिलवा दिया था; क्योंकि सम्राट के मुसलमान बाग़ियों ने लड़ते लड़ते मस्जिद के अन्दर पनाह ले ली थी। वजह दोनों सूरतों में राजकाजी थी, मजहबी नहीं। स्कूलों और कालीजों की किताबों में हमें यह कहीं नहीं बताया जाता कि सारे उत्तर हिन्दुस्तान में जगह जगह बेशुमार मन्दिर हैं, जिनके पुजारियों के पास औरङ्गजेब की मन्दिरों के नाम दी हुई जागीरों के फरमान अभी तक मौजूद हैं। इलाहाबाद में जमुना के उस पार सोमेश्वरनाथ का मन्दिर और काशी में जंगमबाड़ी का मन्दिर इसी तरह के दो बड़े मन्दिर हैं। औरंगजेब के दरबार में काफी ऊंची पदवियां भी हिन्दुओं को मिली हुई थीं। उसका अर्थ-सचिव यानी वजीर मालियात क़रीब क़रीब हमेशा हिन्दू रहा। अफ़ग़ानिस्तान को जीत कर उसने एक हिन्दू को वहां का गवर्नर बना कर दिल्ली से भेजा। औरङ्गजेब के छपे हुए खतों में दो ख़त हैं, जिन में से एक में दिल्ली के एक मुसलमान दरबारी ने सम्राट को लिखा कि आप के यहां फ़लाँ महकमे में दो जिम्मेदारी के ओहदे फ़लाँ फ़लाँ बुतपरस्तों को दिए हुए हैं, शायद आपको उन दोनों ओहदों के लिये कोई ठीक मुसलमान न मिले होंगे, मेरे दो लड़के दो छोटे ओहदों पर काम कर रहे हैं, आप के वफ़ादार हैं, मेरी दरख्वास्त है कि दोनों बुतपरस्तों को हटाकर अपने इन ग़ुलामजादों को उनकी जगह मुक़र्रर कर दीजिये वग़ैरा। खत लिखने वाले ने अपनी बात को मजबूत करने के लिये कुरान की एक आयत नक़ल की, जिसमें ख़ास हालतों में ग़ैरमुसलमानों से व्यवहार करने को मना किया गया है। जो ख़त औरंगजेब ने इस ख़त के जवाब में लिखा, वह बहुत साफ और शानदार है। औरंगजेब ने जवाब दिया—मुझे

मालूम है कि इन दो ज़िम्मेदार ओहदों पर दो ग़ैरमुस्लिम नौकर हैं। इसकी वजह यह नहीं है कि मुझे कोई मुसलमान उन कामों के लिये नहीं मिल सके, बल्कि वजह यह है कि मेरे ख़याल में किसी मुसलमान बादशाह को नौकरियों के देने के मामले में अपनी रिआया के अन्दर से मज़हब के फ़रक़ के ख़याल को अन्दर नहीं लाना चाहिये, इसलिये आपकी दरख़ास्त मंजूर नहीं की जा सकती। इस ख़त में औरंगजेब ने यह भी लिखा कि मुसलमान अर्ज़ी देने वाले ने कुरान की आयत को ग़लत समझा और एक और आयत नक़ल की, जिस का मतलब है कि हर आदमी को इन्साफ करना चाहिये, चाहे वह इन्साफ़ उसके अपने मां-बाप या पास के नातेदारों के ख़िलाफ ही क्यों न जाता हो।

हमारी इतिहास की किताबों में हमें यह नहीं बताया जाता कि सम्राट अकबर से लेकर लगभग तीन सौ बरस तक गोकुशी मुग़लों के राज्य में कानूनी जुर्म था, जिसकी सज़ा में जुर्म करने वाले के दोनों हाथ काट दिये जाते थे। इन तीन सौ बरस में औरंगज़ेब के पचास बरस भी शामिल थे। इन पचास बरस के अन्दर या उनके आगे पीछे दिल्ली के क़िले या शाही महलों में कभी वह मांस इस्तेमाल नहीं किया गया, जिससे किसी हिन्दू का दिल दुखे।

अपने परदादा अकबर की चलाई रीति को जारी रखते हुए औरंगज़ेब हमेशा गंगाजल पीता था। इसलिये नहीं कि वह उसे मज़हबी तौर पर पाक मानता था, बल्कि इसलिये कि हकीमों ने उसे बताया था कि गंगाजल तन्दुरुस्ती के लिए मुफ़ीद है और मौलवियों ने भी यह फ़तवा दे दिया था कि गंगाजल पीने में इस्लाम के असूल के ख़िलाफ कोई बात नहीं।

हमें तारीख़ में औरंगज़ेब के हुक्म से गुरु तेगबहादुर की तो हत्या का हाल बताया जाता है; पर यह नहीं बताया जाता के उसी औरंगज़ेब ने दिल्ली के मशहूर मुसलमान सन्त सरमद को भी अपने सामने बुलवा कर क़त्ल करवा दिया था।

सरमद उपनिषदों और कुरान दोनों का एक बराबर प्रेमी था। उसके फ़क़ीरी दरबार में हिन्दुस्तान के बड़े बड़े राजे महाराजे और नवाब और हिन्दू मुसलमान रईस दोनों आकर जमा हुआ करते थे। वजह दोनों सूरतों में एक ही थी। गुरु तेगबहादुर और सरमद दोनों दिल से दारा के तरफ़दार थे, जिससे लड़कर और जिसे क़त्ल करके औरंगज़ेब तख़्त पर बैठा था। हिन्दू हो या मुसलमान दारा के बड़े बड़े तरफ़दारों को अपने रास्ते से हटा देना औरंगजेब के लिये एक राजकाजी ज़रूरत थी।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि हम यह नहीं कहते कि औरङ्गजेब ने या किसी भी हिन्दू या मुसलमान राजा या बादशाह ने गलतियां या जुल्म नहीं किये। हमारा कहना सिर्फ यह है कि अगर उस जमाने के हिन्दू मुसलमानों के लड़ाई झगड़ों, मेल मिलाप की अच्छी और बुरी बातें ठीक ठीक हमारे सामने रक्खी जावें, तो एक दूसरे की तरफ हमारे दिलों की हालत बिल्कुल बदल जावे। अब हमारी हालत तो यह है कि शायद हजारों हिन्दू ऐसे हैं कि जिन्हें कहानियों की तरह सुन सुन कर इस बात का यकीन है कि सम्राट औरङ्गजेब सवा मन जनेऊ रोज कटवा कर, यानी इतने हिन्दुओं को मुसलमान बना कर, सुबह का नाश्ता किया करता था। हम अपने भोलेपन और अपनी तगंनजरी में यह भी नहीं सोचते कि चोटी या एक जनेऊ का वजन कितना होता है, सवा मन में कितने जनेऊ या कितनी चोटियां होनी चाहियें और साल में कितने दिन होते हैं। औरङ्गजेब पचास बरस तख्त पर रहा। जाहिर है कि अगर सारी दुनियां के आदमी भी हिन्दू होते और सब इस काम के लिए बुला लिये गये होते, तो भी औरङ्गजेब को पचास बरस तक नाश्ता मिलने के लिए वह काफी न होते। हम यह भी नहीं सोचते कि दिल्ली औरङ्गजेब की राजधानी थी। उस सारे जमाने में दिल्ली शहर की आधी के करीब आबादी हमेशा हिन्दू रही और खुशहाल और इज्जतदार हिन्दू। दिल्ली के चारों तरफ पचास मील के अन्दर अन्दर

की आबादी करीब ८५ फी सदी हमेशा हिन्दू रही।

जिन्हें हम औरङ्गजेब की गलतियां मानते हैं, उनमें सबसे बड़ी गलती यह थी। आज कल की हकूमतों और आज कल के राजकाज के ऊंचे से ऊंचे असूलों में से एक यह है कि राज का किसी खास धर्म, साम्प्रदाय या किसी मजहब के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए, ताकि राज के अन्दर सब तरह के विचारों, मानताओं और अलग अलग रीति रिवाजों, पूजा बन्दगी के अलग अलग तरीकों के लिए पूरी आजादी हो और सब धर्मों और मजहबों के आदमी उस राज को एक बराबर अपना राज समझ सकें। आज कल का कोई देश, जिसमें यह आजादी न हो, सभ्य कहलाने का हकदार नहीं हो सकता। सम्राट अकबर ने इस सचाई को आज से लगभग चार सौ बरस पहले समझ लिया था। इस देश की पुरानी धार्मिक परम्परा और यहां अनेक मत मतान्तरों की मौजूदगी ने अकबर को इस असूल के समझने में बहुत बड़ी मदद दी। कबीर साहब को लोप हुए अभी थोड़े ही दिन बीते थे। कबीर के उपदेश सैकड़ों और हजारों जबानों पर इस मुल्क के कोने कोने में गूंज रहे थे। कबीर को इस बारे में अकबर का मानसिक या रुहानी पिता कहना बेजा न होगा। कबीर ने जो मजहब के मैदान में करना चाहा, अकबर ने उसीकी कोशिश राजकाज के मैदान में की। अबुल फजल और फैजी जैसे विद्वान सूफी मनश सलाहकार भी अकबर के दरबार में मौजूद थे। आज की हकूमतें जो राज या हकूमत नाम की संस्था के बारे में करना चाहती है, अकबर ने वही बात राजा के यानी खुद अपने निजी जीवन में ढाल कर दिखाने की महान कोशिश की। इसके 'इबादतखाने' में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, फारसी, जैन, बौद्ध, यहूदी, शिया, सुन्नी, द्वैतवादी और अद्वैतवादी सब तरह के विद्वानों का जमघट रहता था और प्रेम के साथ सब तरह के मतमतांतरों पर चरचे होते थे। दरबार के अन्दर हिन्दू और मुसलमान त्यौहार एक से जोश के साथ मनाये जाते थे।

दशहरे के ऊपर बादशाह के हाथी घोड़े सजाये जाते थे। उनकी पूजा होती और बादशाह का जलूस निकलता था। दिवाली पर सारे महल और किले में रोशनी होती थी, यहां तक कि महल के अन्दर जुआ भी खेला जाता था। सलूनों के दिन बादशाह की धरम की हिन्दू बहनें बादशाह की कलाई पर राखी बांधती थीं। हिन्दू रिवाज के मुताबिक जगह जगह से डाक से भी राखियां आती थीं। महल में होली खेली जाती थी। इसी तरह और भी त्यौहार मनाए जाते थे। राजपूत रानियां दिल्ली और आगरे के किलों के अन्दर अपने महलों में हिन्दू तरीके से अपनी देवी देवताओं की पूजा करती थीं। सच यह है कि बहैसियत बादशाह के अकबर अपने जीवन में न हिन्दू था न मुसलमान, या यों कहिए कि वह दोनों था। नतीजा यह हुआ कि जब कि थोड़े से तंगनजर मुल्लाओं ने उसे काफिर, गद्दार और कुछ वैसे ही तंगदिल हिन्दुओं ने उसे मीठी छुरी समझा, लाखों हिन्दू और मुसलमान आम जनता ने उसे सच्चा प्रजापालक और आदर्श सम्राट माना। "दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" की उस जमाने की मशहूर कहावत आम हिन्दू जनता की जबान पर थी और उनके दिलों की हालत को जाहिर करती थी। रोज सुबह 'झरोखा दर्शन' पर भीड़ लग जाती थी। लाखों आदमी बिना दिल्लीश्वर का सुबह दर्शन किए भोजन न करते थे। हिंदू मुसलमान और सबके साथ हर मामले में बराबर का इन्साफ होता था। प्रजा की खुशहाली दुनियां भर में कहीं और अपनी मिसाल न रखती थी।

दिल्ली दरबार की यह उदारता और रवादारी जहांगीर और शाहजहां के वक्तों में करीब करीब ज्यूं की त्यूं कायम रही। शाहजहां के बाद उसका बड़ा बेटा दारा खुद उपनिषदों का पंडित था और अपने परदादा अकबर के पैरों की निशानी पर चलता था। औरंगजेब दारा की जगह खुद तख्त पर बैठना चाहता था। हिन्दू जनता करीब करीब

सब दारा की तरफदार थी। मुसलमानों में भी सरमद की तरह मेल चाहने वाले दारा की तरफ थे। इन सब ताकतों के खिलाफ औरंगजेब को सिवा इसके कोई चारा न था कि तंगनजर कठमुल्लाई मुस्लिम ताकतों को अपनी तरफ करे। आज ३०० बरस के बाद यह तय करना बहुत मुश्किल है कि औरंगजेब में खुद अपनी कट्टरता ज्यादा थी, या राजकाजी जरूरत ने उसे एक गिरोह को खुशरनेख और खास चाल चलने पर मजबूर किया था। यह भी सच है कि आमतौर पर औरंगजेब खुद बहुत ही परहेजगार, संयमी और सख्त जिन्दगी बसर करने वाला था। आमतौर पर वह हिन्दू और मुसलमानों के साथ बराबर का इन्साफ भी करता था या कम से कम करने की कोशिश करता था। वह प्रजापालक था। तिजारत या कारीगरी की जितनी तरक्की हिंदुस्तान ने उसके जमाने में की और दूध, घी, चांदी, सोने की जो रेल-पेल उस जमाने में इस मुल्क में दिखाई देती थी, उसकी मिसाल दुनिया के किसी दूसरे देश में तो थी ही नहीं, पर हिन्दुस्तान के अन्दर भी उसकी मिसाल ढूंढने के लिये हमें पौने दो हजार बरस पीछे मौर्य खानदान के इतिहास पर जाना पड़ता है।

इस सबके होते हुए भी औरंगजेब अकबर की नीति से कोसों दूर हट गया था। वह एक कट्टर और अपनी निगाहों में एक पक्का मुसलमान था। इसी हैसियत से उसने रहना और बरतना शुरू किया। महल के अन्दर हिन्दू त्यौहारों का मनाया जाना बन्द हो गया। एक मुसलमान बादशाह का दशहरे पर जलूस में निकलना, राखी बंधवाना या दिवाली पर रोशनी करना उसे इस्लाम के खिलाफ दिखाई दिया। नतीजा जो होना था वही हुआ। औरंगजेब की और इसी तरह की छोटी मोटी गलतियों ने, उसकी ज़िन्दगी की मजहबी कट्टरता ने, दिल्ली दरबार के साथ मिलकर हिन्दुस्तान भर के अन्दर हिन्दुओं को यह महसूस करा दिया कि अकबर के दिन गए और, अब उन पर एक विधर्मी का राज है। चारों तरफ बगावतें खड़ी हो गईं। महज अपनी ताकत के बल

किसी तरह औरंगजेब ने ५० बरस तक इन बगावतों को दबाये रखा। औरंगजेब के मरते ही सल्तनत के टुकड़े टुकड़े होने लगे।

हमने मुगलराज और उस में भी खासकर औरंजेब का इतना जिक्र इसलिये किया है; क्योंकि हिन्दुस्तान के सारे मुस्लिम इतिहास में शायद किसी बादशाह के बारे में भी इतनी गलत कहानियां नहीं है, जितनी औरंगजेब के। अगर हम दूसरे बादशाहों के इतिहास को देखें, तो भी कम या ज्यादा यही हाल मिलेगा। अगर हम औरंगजेब और शाहजहां, अकबर और शेरशाह इस देश के सब मुसलमान बादशाहों पर शुरू से आखिर तक एक व्यापक निगाह डालें और बुराइयों और भलाइयों दोनों को ईमानदारी से देखें तो किसी हिन्दू या मुसलमान को अपने देश के मुस्लिम जमाने के इतिहास पर शरमाने की जरूरत नहीं है।

औरंगज़ेब के बाद

औरंगज़ेब के मरने के बाद दिल्ली दरबार के समझदार राज-काजियो ने फिर यह महसूस कर लिया कि दरबार का रंग बदलने में ग़लती हुई। इस ग़लती को फिर से ठीक करने की कोशिशें भी हुई। बाद के कई सम्राट काफ़ी उदार थे। दशहरा और दिवाली फिर से दरबार के अन्दर मनाए जाने लगे। आख़री सम्राट बहादुरशाह, जो सन सत्तावन की जंगे आज़ादी का सबसे बड़ा नेता था, सूफी मनश आदमी था और अपनी सारी हिन्दू मुस्लिम प्रजा को एक निगाह से देखता था। बहुत मुमकिन था कि मुल्क फिर से औरंगज़ेब की ग़लती का काट करके अपने को ठीक रास्ते पर ले आता और अपनी आज़ादी को बचा सकता। पर ठीक उसी नाज़ुक वक्त में इस मुल्क में अंग्रेजों के कदम बढ़ने लगे। १७०७ में औरंजेब की आंख बन्द हुई और १७५७ में प्लासी की लड़ाई हुई। ठीक उस नाज़ुक वक्त में गैरों ने आकर हिन्दू और मुसलमानों दोनों को अलग अलग समझाना शुरू किया—

'अब तुम अपने अपने लिये फिकर न करो; तुम दोनों में हम अमन कायम रख लेंगे।'' उसके बाद के दो सौ बरस के इतिहास में और बारी बारी एक एक को घटा बढ़ा कर फूट के बीज बोने की [illegible] कोशिशों में जाने की अब जगह नहीं है। इस मुल्क के सारे इतिहास में बहुत सी फ़ैसलाकुन लड़ाइयां गिनी जाती हैं। हमारी राय में हमारे देश की सबसे फैसलाकुन लड़ाई सन १६५८ ई० की सामूगढ़ की लड़ाई थी जिसमें औरंगजेब ने दारा को शिकस्त दी और जिस लड़ाई ने अगले तीन सौ बरस के लिये इस मुल्क वालों की किस्मत का फैसला कर दिया।

आशा की किरणें

यह ३०० बरस अब पूरे होने आ रहे हैं। जिस अंधियारी में से इस समय हम निकल रहे हैं वह, भगवान ने चाहा तो, सूरज निकलने से ठीक पहले की घोर अंधियारी साबित होगी। इसी अंधियारी के अन्दर आशा की किरणें आसमान पर दिखाई दे रही हैं। हमें यक़ीन है कि यह अंधियारी हटेगी, इसी करके तानने में हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के दिलों और दिमाग़ों से नासमझियां [illegible] हटेंगी और ३०० बरस की इस रात के बाद सच्ची आज़ादी, खुशहाली और मेल मिलाप का सूरज जल्दी ही फिर से इस जमीन पर पूरे आब ताब के साथ अपनी किरणें फेंकता हुआ दिखाई देगा।

इतिहास पर एक नज़र

अगर हम सारी दुनिया के इतिहास को एक करके देखें तो अलग अलग ज़मानों और अलग अलग युगों की अपनी अपनी अच्छाइयां और अपनी अपनी बुराइयां, अपनी अपनी हवाएं और अपनी अपनी बलाएं होती हैं। लोगों और क़ौमों के कामों को परखने के लिए और उन पर राय क़ायम करने के लिये कसौटियां बदलती रहती हैं। १३ वीं

सदी के किसी आदमी या किसी चीज़ को २० वीं सदी की कसौटी पर कसकर देखना कभी कभी बड़ी बेइन्साफी होती है और उससे हम गलत नतीजे निकाल बैठते हैं। ईसा की १५ वीं, १६ वीं, १७ वीं और १८ वीं सदी मज़हब के मामले में एक खास तंग नज़री की सदियां थीं। जगह जगह दुनियां के हाकिम उन दिनों यह समझते थे कि राजा को यह हक़ है कि जो धर्म उसका हो वही धर्म ज़बर्दस्ती प्रजा से मनवाए। इसी ग़लत असूल की बिना पर उन चार सौ बरस के अन्दर योरोप के एक एक मुल्क में जहां जहां कोई प्रोटेस्टैन्ट बादशाह था वहां लाखों कैथोलिक ज़िन्दा जला दिए गए या तलवार के घाट उतार दिए गए। इस छोटी सी पुस्तक में मिसालें देने की ज़रूरत नहीं है। इस अंधेरे युग में—और सचमुच योरोप के इतिहास में वह अंधेरा युग "डार्क ऐजेज़" नाम से पुकारा जाता है। योरोप के ज़िले के ज़िले और सूबे के सूबे इसी ज़ुल्म की वजह से वीरान पड़े हुए थे। यह वह समय था जब कि हिन्दुस्तान के अलग अलग सूबे हरे भरे बाग़ों की तरह लह-लहा रहे थे और एक एक सूबे एक एक शहर, एक एक गांव और एक एक गली में हिन्दू और मुसलमान मिलकर भाई भाई की तरह रह रहे थे। जो कटाकटी सदियों योरोप के कैथोलिकों और प्रोटेस्टैन्टों में रही ठीक वही इन दिनों जापान में ईसाइयों और बौद्धों में देखने को मिलती थी। कम या ज्यादा यही हालत चीन और दूसरे मुल्कों में भी थी। हिन्दुस्तान के कुछ मुसलमान बादशाहों ने भी इसी सिलसिले में ग़लतियां की। डी० ए० वी० कालेज लाहौर के हिस्टरी के प्रोफेसर पं० श्रीराम शर्मा ने अपनी ख़ासी अच्छी किताब 'दी रिलिजस पालिसी आफ दी मुग़ल्स' में इस मुल्क के मुग़ल बादशाहों की मज़हबी पालिसी को तफ़सील के साथ बयान करते हुए और उस ज़माने के योरोप के बादशाहों का मुकाबला करते हुए बड़ी अच्छी तरह दर्शाया है कि हमारे यहां के मुसलमान बादशाह उस ज़माने के योरोप के बादशाहों के मुकाबिले में कहीं ज्यादा आज़ाद, रवादार, उदार और प्रजापालक थे।

उन्होंने दिखाया है कि मज़हब के नाम पर जिस तरह के जुल्म उन दिनों योरोप के एक एक मुल्क में हुए, हिन्दुस्तान की सर ज़मीन में कभी भी देखने में नहीं आए। उन्होंने दिखाया है कि योरोप के ईसाई बादशाहों के मुकाबले में हिन्दुस्तान के बुरे औ कट्टर से कट्टर मुसलमान बादशाह भी इन्साफ़ और रवादारी के पुतले थे। इतिहास का हर इन्साफ़ पसन्द पढ़ने वाला इसी नतीजे पर पहुँचे बिना नहीं रह सकता। अगर आज योरोप के किसी भी देश में कैथोलिक संगठन या प्रोटेस्टैन्ट तंजीम कैथोलिक राज या प्रोटेस्टैन्ट हकूमत की ज़रूरत नहीं है और एक एक मुल्क में वही कैथोलिक और प्रोटेस्टैन्ट जो सदियों एक दूसरे के जानी दुश्मन थे आज दूध और शक्कर की तरह मिलकर रह रहे हैं और अपने अपने देश को बढ़ा और चमका रहे हैं, तो उनसे कहीं ज्यादा पुरानी और ऊंची सभ्यता वाले हिन्दुस्तान में प्रेम और मेल मिलाप की ऐसी ही बल्कि इससे भी बढ़कर राहें क्यों न खुल सकें।

हमारा अगला रास्ता

हमारा आगे का रास्ता साफ है। हमें गैरों की चालों को निकम्मा करना है। हमें अपनी फ़िरक़ेवाराना तंग नज़रियों से ऊपर उठना है। सबके लिए पूजा बन्दगी के तरीकों की पूरी आज़ादी को क़ायम रखते हुए भी हमें दीन धर्म के बुनियादी असूलों को समझना है, इन असूलों को ज्यादा और रीति रिवाज़ों की ऊपरी अलामतों को कम अहमियत देनी है। दीन धरम के नाम पर पाप का बाज़ार हमें ख़त्म करना है। उपनिषद, गीता, कबीर, नानक और मुसलमान सूफियों की बताई राह से हम भटक गए। हमें उसी राह पर लौट कर आना है। इस तरह एक दूसरे पर भरोसा करते हुए, एक दूसरे से प्रेम करते हुए और एक दूसरे की सेवा करते हुए हम मिलकर अपने इस प्यारे मुल्क को बढ़ाना औ चमकाना है। हमें जातपात और छुआछूत का ख़ात्मा करना है।